भारतीय वाङ्मय

हिन्दी तथा अहिन्दीभाषी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृतिक समाचारों की मासिक पत्रिका

वर्ष 2 | **जनवरी** 2001 | **अंक** 1

शिक्षा और संस्कृति

अब समय आ गया है, अपनी अस्मिता की ओर लौटें। मैकाले की शिक्षा व्यवस्था इस देश के लिए अभिशाप सिद्ध हुई। इसने हमें अपनी जड़ों से उखाड़ दिया। हम अपने देश को भूल गये, अपनी संस्कृति को हेय समझने लगे, देश के ज्ञान को तुच्छ समझने लगे, इतना ही नहीं अपने परिवेश के प्रति भी उदासीन हो गये। अपने देश की विभिन्न भाषाओं और संस्कृति की सुगन्ध की उपेक्षा कर हमने इस देश के लिए कृत्रिम भाषा और जीवन पद्धति को स्वीकार कर लिया।

इसने हमें संस्कार मुक्त कर दिया। व्यवसाय के लिए आई ईस्ट इण्डिया कम्पनी धीरे-धीरे ब्रिटेन की सरकार बन गई और उसने अपनी सत्ता की जड़ जमाने के लिए मैकाले की शिक्षा-नीति के माध्यम से हमें अपनी जड़ों से उखाड़ दिया। हमारे धर्म, शिक्षा, संस्कृति, अध्यात्म, राष्ट्रीयता सभी को साम्प्रदायिकता की संज्ञा दे दी और हमें अपने देशवासियों में परस्पर भेद उत्पन्न कर अविश्वास का वातावरण बना दिया। राष्ट्रभक्ति को साम्प्रदायिकता में बदल दिया।

आज हम फिर उसी ओर जा रहे हैं। भूमण्डलीकरण के वातावरण में राष्ट्रवाद अथवा राष्ट्रीयता को बचाये रखना चुनौती बनता जा रहा है। राष्ट्रीयता भौगोलिक अवधारणा मात्र नहीं है, यह मुख्य रूप से भावनात्मक अवधारणा है। इस भावना का हम अपनी परम्परा, ज्ञान-विज्ञान, दर्शन और संस्कृति, भाषा तथा साहित्य के माध्यम से ही शाश्वत सृजन कर सकते हैं। आज हमारे युवक विदेश से प्राप्त ज्ञान को वरीयता प्रदान करते हैं जबकि हमारे देश को ज्ञान-विज्ञान के ग्रन्थों में उससे कहीं मौलिक और प्रामाणिक ज्ञान उपलब्ध है।

संस्कृत समस्त भारतीय भाषाओं की जननी है। इसे देवभाषा भी कहते हैं। भारतवासी इस भाषा में ही अपने आराध्य का स्मरण करते हैं। यह भाषा देश को एक सूत्र में जोड़ती है, इसकी उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। तभी हम अपनी जड़ों की ओर लौट सकेंगे।

आज हमारे देश के विद्यार्थी न्यूटन को जानते हैं किन्तु आर्यभट्ट का ज्ञान उन्हें नहीं है। कम्प्यूटर की जानकारी है परन्तु शून्य की अवधारणा इस देश के विद्वानों की देन है, इससे वे अनभिज्ञ हैं। ब्रह्माण्ड के रहस्यों का वर्णन हमारे संस्कृत ग्रन्थों में वर्णित है वह विश्व की अन्य भाषा में नहीं।

आज शिक्षा के स्वरूप को संस्कृतोन्मुख कर ही देश में आध्यात्मिक भौतिकवाद, नैतिकता, राष्ट्रीयता तथा कारयत्री प्रतिभा का सृजन कर सकेंगे।

साहित्य की दिशा

आजादी के लगभग 50 वर्षों बाद आज हमारा साहित्य जिस मुकाम पर पहुँचा है, वह निराशाजनक तो नहीं किन्तु कोलाहल भरा अवश्य है। किसी को लग रहा है कि अब फॉसिज्म के खतरे बढ़ रहे हैं और साहित्य की उदार एवं प्रगतिशील परम्परा पर ग्रहण लगने ही वाला है। कोई बहुत सोच-विचार के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचा है कि यूरोपीय धर्म-निरपेक्षता भारतीय मानस को रास नहीं आ रही है और अब मनुष्य केन्द्रित आध्यात्मिकता की आवश्यकता है। किसी को साफ दिखाई पड़ रहा है कि मुक्त बाजार की सस्ती मानसिक अपसंस्कृति को बढ़ावा दे रही है और शीघ्र ही साहित्य, संस्कृति, कला, सौन्दर्यबोध सब कुछ बिकाऊ माल बन जायगा। हिन्दी-साहित्य की जातीय परम्परा को लेकर भी साहित्यकारों के मस्तक पर चिन्ता की रेखायें उभरने लगी हैं। एक ओर से दृढ़ता भरी आवाज आ रही है कि शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने वाली और पीड़ित जनता की पक्षधर रचना-परम्परा ही हिन्दी की जातीय परम्परा है। इसे आगे बढ़ाना जरूरी है। इसके विरुद्ध दूसरा स्वर यह उभर रहा है कि नहीं 'विरुद्धों का सामञ्जस्य' ही हमारी जातीय परम्परा है। तुलसीदास और निराला में इसे बखूबी देखा जा सकता है। साहित्यकारों की एक धारा पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी सांस्कृतिक परम्परा को बहुलतावादी मानते हुए सब कुछ को सहज और स्वाभाविक स्वीकार करके चीजों को समग्रता में देखने की बात कह रही है। इन सबके साथ किन्तु इस सबसे अलग दो तल्खी भरे स्वर भी वातावरण में गूँज रहे हैं। एक है—दलित चेतना का स्वर और दूसरा है—नारी-मुक्ति आन्दोलन का स्वर। दलित वर्ग के लेखक अनुभव कर रहे हैं कि समाज ने हजारों वर्षों से उन्हें दबा कर रखा है। उनके साथ अन्याय और अत्याचार किया है, अब उन्हें सामाजिक न्याय मिलना चाहिए। उन्हें किसी की दया और करुणा की आवश्यकता नहीं है। महिला लेखिकाओं की पीड़ा भी कुछ इसी कोटि की है। उन्हें शूद्रों की कोटि में रखा और मानवीय अधिकारों से वंचित किया। आज बड़ी तल्खी और कड़ुवाहट भरे स्वर में वे अपने अधिकारों की माँग कर रही हैं। साहित्य के आकाश में इतने स्वरों के उभरने से इतना तो साफ है कि अभिव्यक्ति का कोई खास संकट नहीं है। ऐसी स्थिति में फासिज्म का कोई तात्कालिक खतरा भी नहीं है। खतरे दूसरे हैं, और वे यह हैं कि जहाँ रचना के क्षेत्र में विचार-शक्ति और भाव-शक्ति में इतने बिखराव हैं वहाँ हम देश और लोक-हित में अपनी कर्म-शक्ति को किसी निश्चित दिशा में अग्रसर नहीं कर सकते। आजादी के पहले भी साहित्य में दबे उभरे कई स्वर थे। प्रखर राष्ट्रीय चेतना का स्वर था तो सामान्य सुधारवादी परन्तु नरम स्वर भी था। प्रगतिशील धारा थी जो सत्ता और पूँजी के गठजोड़ का विरोध कर रही थी तो अत्यन्त कल्पनाशील स्वच्छन्दतावादी रचनाकार भी थे जो देशभक्ति के साथ ही विश्वमानवतावाद के साथ जुड़े थे किन्तु इन सबके बावजूद पूरे साहित्य का मुख्य प्रवाह देश-

शेष अगले पृष्ठ पर

पृष्ठ 1 का शेष

भक्ति केन्द्रित था। हमारा एक सामूहिक भाव भी था जो स्वातंत्र्य चेतना के रूप में व्यक्त हो रहा था। आज हमारा कोई सामूहिक भाव निर्दिष्ट नहीं हो पा रहा है। इसलिए हम लोक और देशहित में किसी निश्चित लक्ष्य की ओर अग्रसर नहीं हो पा रहे हैं। अपने बिखरे असन्तोष को कोई निश्चित वैचारिक आधार नहीं दे पा रहे हैं। इसकी चिन्ता भी नहीं कर रहे हैं। इसलिए हमारी आवाज आपस में ही टकरा कर बिखर जा रही है। हम अपने मुख्य-विरोधी की लक्षित-अलक्षित पद-चाप भी नहीं सुन पा रहे हैं। या सुन रहे हैं तो भी न सुनने का अभिनय कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में साहित्य की उपेक्षा होनी ही है। यदि हमें राजनीति के आगे मशाल बनकर चलना है तो सभी तरह के प्रलोभनों से ऊपर उठकर मनुष्यता की, मानवीय संवेदना की, रक्षा करनी होगी। यदि हम इसी तरह बिकते रहे या बिकाऊ माल की तरह साहित्य का (सृजन नहीं) उत्पादन करते रहे तो वह दिन दूर नहीं जब सबसे ज्यादा रँगा-चुँगा, सस्ते मनोरंजन से भरा, सनसनीखेज, किशोर भावुकता को सहलाने वाला साहित्य ही सबसे मूल्यवान माना जायगा। प्रत्येक युग में साहित्य ही मानवीय मूल्यवत्ता का सबसे शक्तिशाली सुरक्षा-केन्द्र रहा है। हमें अपनी इस विरासत को याद रखना होगा।

—रामचन्द्र तिवारी

अनुवाद

अनुवाद अपनी भाषा को वास्तव में जानने-पहचानने का सबसे बड़ा माध्यम है। लिखते वक्त तो जो शब्द हमें सबसे पहले सूझते हैं हम प्राय: उन्हीं का प्रयोग करते हैं।....लेकिन अनुवाद करते हुए तो हमारे लिए जरूरी हो जाता है कि हम किसी शब्द या मुहावरे के वजन के लिए अपनी भाषा के शब्दों मुहावरों को कई तरह से खंगालें। अच्छे से अच्छे अनुवादक के लिए इसके लिये बराबर शब्दकोश की ही नहीं, अपनी भाषा के स्मृति कोश को भी बार-बार टटोलना पड़ता है। इस अर्थ में अनुवाद का कार्य लेखक के लिए एक तरह का सतत भाषा शिक्षण भी है। अपने को अपने द्वारा शिक्षित करने का काम भी है। **—प्रयाग शुक्ल**

विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभाग

देश के सभी विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में भी बोलबाला पुरुषों का है। यही लोग विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रमों का निर्धारण करते हैं। यही सरकारी, अर्द्धसरकारी और निजी प्रतिष्ठानों में अपनी जड़ें जमाए हुए हैं। पुरस्कार समितियों में उनकी ऐसी पकड़ है कि ये लोग जिसे चाहें, उसी को पुरस्कार दिलवा सकते हैं।

अनुमान है कि देशभर की साहित्य अकादमियों और निजी प्रतिष्ठानों द्वारा प्रतिवर्ष साहित्यकारों को सम्मान-राशि और पुरस्कारों के रूप में जो धन दिया जाता है वह दो करोड़ रुपयों से कम नही है, शायद अधिक हो। पिछले बीस वर्ष में जितने साहित्यकारों का सम्मान किया गया, जिन्हें कृतियों के लिए पुरस्कृत किया गया, उनका यदि पूरा विवरण तैयार किया जाए तो चौंकानेवाले तथ्य उभरेंगे। ऐसे कई (पुरुष) लेखकों के नाम सामने आएँगे जिन्होंने लाख-लाख, दो-दो लाख के निरन्तर पुरस्कार प्राप्त किये हैं। इन्हें चार-पाँच वर्ष की अवधि में ही दस लाख रुपये से अधिक के पुरस्कार मिल गए हैं। दूसरा यह तथ्य सामने आएगा कि लेखिकाओं (बहुत अच्छा लिखने वाली लेखिकाओं सहित) की संख्या पुरस्कृत नामों में पाँच से दस प्रतिशत के बीच होगी।

—डॉ० महीप सिंह

कानून की भाषा

कानून की भाषा को भारतीय बनाइये। आज देश को स्वतंत्र हुए लगभग 53 वर्ष हो रहे हैं, किन्तु हमारे सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिवेश में कहीं भी भारतीयता की अपने राष्ट्रीय व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति नहीं मिलती। कानूनविद भूतपूर्व अतिरिक्त महाधिवक्ता श्री ए०एम० सिंघवी का कथन है—

हमारे सर्वोच्च न्यायालय की भाषा आज तक वही लैटिन मूल की अंग्रेजी है, जिसे अंग्रेज तिरपन साल पहले हमारे लिए यहाँ उतार गये थे। यह हमारे 'हाई न्याय' की भाषा है। रही निचली अदालतों की भाषा की बात तो वहाँ अभी तक मुगलिया-नवाबी दौर चल रहा है। थाने-कचहरी का कोई कानूनी दस्तावेज देखिये आपको लगेगा कि पारसी थियेटर की किसी नौटंकी का कोई डायलॉग पढ़ रहे हैं। फिल्मी संवादों के 'आदि-कादरखान' महान डायलॉगबाज अभिनेता सोहराब मोदी का कोई संवाद। 'मकतूला', 'मुवक्किल', 'साकिन', 'फौत', 'मजकूला', 'नजीर' वगैरह-वगैरह। हमारे गाँवों के असाक्षरों को अगर कोई साक्षरता आन्दोलन कभी अक्षर लिखने के अलावा कानून के इन कूट शब्दों का मतलब ही समझा सके, तो वह थाने-कचहरी से लेकर, सरकार-साहूकार तक के दस्तावेजों में लगे उनके अँगूठे की छापों या टेढ़े-मेढ़े दस्तखतों में बन्द उनके सदियों पुराने दुर्भाग्य से काफी हद तक छुटकारा दिला सकता है।

मेरी परिकल्पना है कि प्राचीन को भविष्य और अतीत के साथ जोड़ा जाये। आर्यभट्ट, ज्योतिष, आयुर्वेदिक एवं वैज्ञानिक इसके साथ ही सम्पूर्ण भारतीय विद्याओं का क्या महत्त्व है, हम यह बताना चाहते हैं। चाणक्य के इतिहास और उसकी नीतियों पर भी हम फोकस कर रहे हैं। इसके साथ ही मुगलकालीन कलाओं को भी महत्त्व दिया जायेगा। प्राचीनकाल में इन परम्पराओं का क्या महत्त्व था और वर्तमान सन्दर्भों में इनका प्रयोग कैसे किया जा सकता है, हम इस पर विचार कर रहे हैं।

एल०एम०सिंघवी
अध्यक्ष, इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, नई दिल्ली

लोकतन्त्र बनाम राष्ट्रवाद

आज देश में कैसा लोकतन्त्र है, परिवारवाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद क्या यही राष्ट्रवाद की भूमिका है। सार्वभौमिकीकरण, भूमण्डलीकरण की आँधी हमारा देश झेल पायेगा? निजी स्वार्थों से ऊपर उठकर आइये विचार करें। देश की अस्मिता को बचायें।

राष्ट्रधर्म की पुकार

राजनयिक सिद्धान्त के अन्तर्गत आत्मरक्षा, समाजहित और राष्ट्र-सुरक्षा परम धर्म मान गए हैं। भारत की आजादी के अर्धशतक बाद ही हमारी तन्द्रा जस की तस है। परिणामत: राष्ट्रधर्म दृष्टि से ओझल होता जा रहा है। खबर छपी है कि चीन ने भारतीय सीमा पर सड़क का निर्माण किया है और वह भारतीय सीमा में पाँच किलोमीटर घुस भी आया है। यद्यपि सरकारी स्तर से इस खबर का खण्डन हुआ है तथापि 'चीनी-हिन्दी भाई-भाई' के मधुर नारे का कुफल हम चख चुके हैं। चीन ने हमारे बड़े भू-भाग पर कब्जा कर रखा है। 4056 किलोमीटर लम्बी विवादित सीमा के समाधान के लिए 1993 से भारत चीन से बातें कर रहा है, लेकिन परिणाम कुछ नहीं निकला। चीन की नीयत के विषय में जानना क्या शेष रह गया है? 'वाशिंगटन टाइम्स' की खबर है कि चीन पाकिस्तान को ऐसे नाभिकीय प्रक्षेप्यास्त्र प्रदान कर रहा है जिसका लक्ष्य भारत के प्रमुख नगर हो सकते हैं। हमारी कूटनीति निकष पर अगर खरी नहीं उतरती है तो राष्ट्रधर्म की पुकार की रक्षा हम कैसे कर सकते हैं?

आधुनिकता का अभिशाप

आजाद हुए 53 साल हो गये लेकिन अंग्रेजीयत हमारी मानसिकता पर पूरी तरह से हावी होती गयी। हम ग्राम स्वराज की कल्पना तक को भूल गये और आधुनिकीकरण का लिबास ओढ़कर अपने आप को यह साबित करने लगे कि हम एडवांस हो चुके हैं। यही कारण है हमारे पिछड़ने का। और बदलाव चाहिए तो अतीत से सीख लेनी होगी वर्तमान को समझना होगा और भविष्य को सँवारना होगा। **—भी०सी० जोशी**

सम्मान-पुरस्कार

कृष्णा सोबती को रामकृष्ण जयदयाल हारमोनी अवार्ड

हिन्दी की प्रख्यात उपन्यासकार **कृष्णा सोबती** को उनकी कल्पनाशील रचनाधर्मिता के लिए 1999 के रामकृष्ण जयदयाल हारमोनी अवार्ड से सम्मानित किया गया है। इस सम्मान के तहत 'मित्रो मरजानी' और 'जिन्दगीनामा' की लेखिका कृष्णा सोबती को एक लाख रुपये और एक प्रशस्त पत्र दिया गया। इस वर्ष का पुरस्कार शहीद भगत सिंह के एक मात्र जीवित भाई सरदार कुलतार सिंह ने प्रदान किया।

हिन्दी में विज्ञान की मौलिक पुस्तकों के लिए पुरस्कार

केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने हिन्दी में लिखी गई विज्ञान की पुस्तकों के मौलिक लेखन के लिए पुरस्कारों का एलान किया है। पहला पुरस्कार एक लाख रुपये का होगा। साथ में प्रमाण-पत्र व स्मृति-चिन्ह भी दिया जाएगा। दूसरे और तीसरे पुरस्कार विजेताओं को क्रमश: 75 हजार रुपये व 50 हजार रुपये दिये जायेंगे। इन विजेताओं को भी स्मृति चिन्ह व प्रमाण-पत्र मिलेंगे। इनके अलावा 10 सांत्वना पुरस्कार भी दिए जाएंगे।

गाओ भुंगजियान को साहित्य का नोबल

पहली बार चीन के प्रतिष्ठित लेखक **गाओ भुगजियान** को इस वर्ष के साहित्य के नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया जाएगा। स्वीडिश अकादमी की घोषणा के अनुसार श्री भुंगजियान को वर्ष 2000 के नोबेल साहित्य पुरस्कार के लिए चुना गया है। अकादमी ने अपने प्रशस्ति पत्र में कहा है कि श्री गाओ ने मजी हुई भाषा में अंतरराष्ट्रीय रूप से मुख्य लेखन किया। उनके इन्हीं गुणों ने चीनी उपन्यास और नाटक के लिए नयी राहें खोलीं। श्री गाओ को पुरस्कार के रूप में करीब दस लाख डालर मिलेंगे। गाओ का साहित्य एक आन्दोलन है। उनके नाटक अभिव्यक्ति हैं चीन की उस समय की दशा के। उनकी कविताएँ कारुणिक रुदन हैं, पीड़ित मानवता उनके उपन्यासों की अंतरात्मा है। एक व्यक्ति जो मूल्यों को तलाशता है। गाओ का रचना संसार समृद्ध तो है ही, वैविधता उन्हें एकदम अलग खड़ा करती है। उन्होंने एक बार कहा था, 'मैं कलाकार हूँ जो अपनी कलाकृतियों के बीच रहता हूँ। लेखन तो बस हो जाता है।' कलाकार को सम्मान, निश्चित ही प्रशंसनीय है।

कनाडा की उपन्यासकार मारग्रेट एटवुड को बुकर

कनाडा की सुप्रसिद्ध उपन्यासकार **मारग्रेट एटवुड** को उनके उपन्यास 'दि ब्लाइंट एसेसिन' के लिए बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। एटवुड इससे पहले भी 1986, 1989 और 1996 में इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए मनोनीत हो चुकी हैं। यह चौथा मनोनयन है जब उन्हें अन्तत: 21 हजार पाउंड के पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

साहित्यिक सारस्वत सम्मान कमलेश्वर को

राष्ट्रीय विचार विकास प्रतिष्ठान की ओर से इस वर्ष का साहित्यिक सारस्वत सम्मान साहित्यकार **कमलेश्वर** को दिया जाएगा। कला और साहित्य को प्रोत्साहित करने वाली इस संस्था की ओर से सारस्वत सेवा सम्मान के लिए लेखक हरीश पाठक और मराठी साहित्य सारस्वत सम्मान के लिए एकनाथ आबूज को चुना गया है।

ईशाक अली को मैथिलीशरण सम्मान

अखिल भारतीय साहित्यकार अभिनन्दन समिति, मथुरा द्वारा ग्राम भटौना निवासी **ईशाक अली 'सुंदर'** को उनकी काव्य सेवाओं के लिए 'कविवर मैथिलीशरण गुप्त सम्मान' से सम्मानित किया गया। मथुरा की उक्त संस्था सन् 1986 से साहित्य के क्षेत्र में कार्यरत है।

काका हाथरसी पुरस्कार

हरियाणा मैत्री संघ और काका हाथरसी ट्रस्ट की ओर से केन्द्रीय सूचना एवं प्रसारण मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज ने 3 दिसम्बर को नयी दिल्ली में वर्ष 1999 के श्रेष्ठ हास्य व्यंग्यकार **अरुण जैमिनी** को 30 हजार रुपये के हास्यरस काका हाथरसी पुरस्कार से सम्मानित किया।

भारत-भारती व दीनदयाल सम्मान

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने वर्ष 1999 के लिए पुरस्कार घोषित किये हैं।

2 लाख 51 हजार रुपये का भारत भारती सम्मान **डॉ० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक'** को, दो लाख रुपये का महात्मा गाँधी सम्मान **धर्मपाल** को, हिन्दी गौरव सम्मान **सीताराम चतुर्वेदी** को, पं० दीनदयाल उपाध्याय सम्मान **दत्तोपन्त ठेंगड़ी** को, अवन्तीबाई सम्मान **वचनेश त्रिपाठी** को, लोहिया साहित्य सम्मान **कुँवरनारायण** को तथा पचास हजार रुपये का साहित्य भूषण सम्मान **डॉ० शिवबालक शुक्ल, डॉ० रामफेर त्रिपाठी, श्रीमती मृदुला गर्ग, डॉ० चन्द्रकान्त वान्दिवडेकर, डॉ० सुनीता जैन, डॉ० लक्ष्मणदत्त गौतम, डॉ० नरेन्द्र मोहन, डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित, कैलाशचन्द्र भाटिया, कृष्ण बिहारी मिश्र, डॉ० कन्हैया सिंह** एवं **भोलाशंकर व्यास** को प्रदान किया जायेगा।

इसके अतिरिक्त विद्या भूषण, लोक भूषण, कला भूषण, पत्रकारिता भूषण, विज्ञान भूषण, प्रवासी भारतीय हिन्दी भूषण, बाल साहित्य भारती, सौहार्द एवं हिन्दी विदेश प्रसार पुरस्कारों की भी घोषणा की गई है।

श्रीवाणी सम्मान

मैक्सिको के ई०एल० कालेज में संस्कृत के अतिथि प्रोफेसर **डॉ० रसिक बिहारी जोशी** को दो लाख रुपये के रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्रीवाणी सम्मान के लिए चुना गया है। डॉ० जोशी को सम्मान में दो लाख रुपये के अलावा प्रशस्ति पत्र तथा प्रतीक चिन्ह दिया जायगा। 73 वर्षीय डॉक्टर जोशी को 1995 में साहित्य अकादमी पुरस्कार तथा 1989 में दिल्ली संस्कृत अकादमी का पुरस्कार मिल चुका है।

साहित्यिक पुरस्कारों की विश्वसनीयता

आज हिन्दी में साहित्यिक पुरस्कारों की भरमार हो गई है। देखा यह जा रहा है कि पुरस्कार रचना पर नहीं रचनाकारों के प्रभाव और प्रयास पर दिया जा रहा है।

किसी समय साहित्य अकादमी के पुरस्कार को प्रतिष्ठा से देखा जाता था, किन्तु आज 'साहित्य अकादमी' के पुरस्कार को महत्त्व नहीं दिया जाता। पुरस्कारों को प्राप्त करने के लिए लेखकों के वर्ग- विशेष द्वारा संगठित प्रयास होने लगा है। पुरस्कार चयन समितियों में निष्पक्षता का अभाव होता जा रहा है। कुछ पुरस्कार तो राजनीतिक मात्र रह गये हैं जो पुरस्कृत करने के बजाय उपकृत करने के लिए दिये जाते हैं। साहित्य तथा साहित्यकार की प्रतिष्ठा दोनों प्रभावित होती है, यह विचारणीय है।

''साहित्यिक पुरस्कारों के चारों ओर एक माफिया तंत्र विकसित हो गया है। कुछ लोग चतुरता से सत्ता प्रतिष्ठानों में अपनी पकड़ बना लेते हैं और वे इस बात के निर्णायक हो गये हैं कि किसे पुरस्कार मिले और किसे न मिले यह स्थिति बहुत ही खराब है। गुटबाजी आज गिरोह में बदल गयी है।'' **—महीप सिंह**

❑ ❑

हिन्दी का क्षेत्र किसी भी भारतीय भाषा साहित्य के क्षेत्र तिगुना-चौगुना बड़ा है। किन्तु साहित्य की राष्ट्रीय अकादमी के पास जो एक ठो पुरस्कार सिंधी या गुजराती के किसी लेखक को राष्ट्रीय महत्त्व प्रदान करने के लिए है, वही इकलौता पुरस्कार हिन्दी के लिए भी है।

—रमेशचन्द्र शाह

हिन्दी संस्थान के पुरस्कारों पर विवाद

जिस शहर में श्रीलाल शुक्ल जैसा प्रतिभाशाली साहित्यकार मौजूद हो वहाँ सर्वोच्च भारत-भारती सम्मान के लिए डॉ० लक्ष्मीशंकर मिश्र 'निशंक' का चयन दुर्भाग्यपूर्ण है। कहाँ एक ओर तो यह सम्मान बाबा नागार्जुन, अमृतलाल नागर, महादेवी वर्मा और नरेश मेहता सहित अन्य महान विभूतियों को दिया गया और कहाँ यह दिन आ गया जब श्री निशंक को यह सम्मान देना पड़ा है। सवाल केवल विचारधारा का ही नहीं है। विचारधारा कुछ भी हो लेकिन कम से कम उसे सही अर्थों में साहित्यकार तो होना ही चाहिए।

—वीरेन्द्र यादव

स्मृति शेष

प्रगतिशील समीक्षा का एक और स्तम्भ ढह गया

हिन्दी की प्रगतिशील समीक्षा के आरम्भिक उन्नायकों में अग्रणी **श्री शिवदान सिंह चौहान** नहीं रहे। पिछले तीन दशकों से श्री चौहान हिन्दी-आलोचना-मंच के नेपथ्य में रहे। हाल ही में उनकी एक बड़ी रचना 'परिप्रेक्ष्य को सही करते हुए' प्रकाशित हुई है। इसमें कुछ पुराने लेखों के साथ श्री चौहान के 1960 से 1994 के बीच लिखे आलोचनात्मक निबन्ध संगृहीत हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि श्री चौहान नेपथ्य में रहते हुए भी नितांत निष्क्रिय नहीं थे। वे समय-समय पर अपने विचार व्यक्त करते रहे थे। यह अवश्य था कि निरन्तर मुखर न होने के कारण आज की आपा-धापी में लोग उन्हें भूल से गए थे। आलोचना के रजिस्टर में उन्हें अनुपस्थित दिखाया जा रहा था। किन्तु हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि श्री चौहान ने विख्यात 'आलोचना' पत्रिका के संस्थापक सम्पादक के रूप में ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया था। एक समय था जब वे निरन्तर सक्रिय थे। 'प्रगतिवाद' (1946 ई०), 'हिन्दी साहित्य के अस्सी वर्ष' (1954 ई०), 'साहित्यानुशीलन' (1955 ई०), 'आलोचना के मान' (1958 ई०), 'साहित्य की समस्यायें' (1958 ई०), हिन्दी गद्य साहित्य (1965 ई०, परिवर्द्धित संस्करण) जैसी कृतियाँ हिन्दी-जगत् में आदर के साथ देखी जाती थीं। वे प्रगतिशील आलोचना के एक दृढ़ स्तम्भ थे। इधर लोगों का ध्यान उनकी ओर गया था। 'आलोचना' पत्रिका के पुनः प्रकाशित होने पर उन्हीं से लोकार्पण कराया गया था। लेकिन यह सब इस भाव से किया जा रहा था जैसे उनकी बुजुर्गियत को आदर दिया जा रहा हो। उनके कृतित्व की महत्ता की ओर लोगों का ध्यान नहीं था। 1918 में जन्मे श्री चौहान का 82 वर्ष की अवस्था में देहावसान उनके दीर्घ जीवन का साक्षी है किन्तु पिछले कई दशकों से हिन्दी-जगत् द्वारा की जाने वाली उपेक्षा उनकी दीर्घ अस्वस्थता का अलक्ष्य कारण रही हो, तो आश्चर्य नहीं। कुछ भी हो, उनके देहावसान से हिन्दी की प्रगतिशील समीक्षा का एक और स्तम्भ ढह गया।

डॉ० रामसिंह तोमर नहीं रहे

हिन्दी के प्रख्यात विद्वान् और विश्वभारती शान्ति निकेतन के हिन्दी विभाग के पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष, **डॉ० रामसिंह तोमर** का विगत 23 अक्टूबर, 2000 को देहावसान हो गया। शान्ति निकेतन का एक कोना (पूर्व पल्ली) सूना हो गया। लगभग एक वर्ष पूर्व उनकी पत्नी (कनिका तोमर) की मृत्यु कैंसर से हो गई थी। तभी से तोमर जी जीवन के प्रति उदासीन हो गए थे। अंततः इस उदासी ने उनके जीवन का अन्त कर दिया। तोमर जी प्राकृत और अपभ्रंश के मान्य विद्वान् तो थे ही देश-विदेश की कई अन्य भाषाओं में भी उनकी अच्छी गति थी। वे अंग्रेजी, फ्रेंच, इतालवी, बँगला आदि कई भाषाओं पर समान अधिकार रखते थे। उन्होंने विश्व कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की कहानियों का इतालवी में अनुवाद किया था। वे गुरुदेव द्वारा आरम्भ की गई विश्वभारती पत्रिका का जीवनभर सम्पादन करते रहे। तमिल के आलवार भक्तों की वाणी का अनुवाद अंग्रेजी तथा भारत की अन्य भाषाओं में हो चुका है। तोमर जी ने तमिल के प्रख्यात विद्वान् पण्डित श्री निवास राघवन द्वारा आलवार भक्तों की सम्पूर्ण वाणी का प्रामाणिक अनुवाद कराकर आठ खण्डों में प्रकाशित कराया है। यह ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य 'हलवासिया शोध ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत हुआ। तोमर जी शान्ति निकेतन की सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक थे। मितभाषी थे किन्तु उनका व्यक्तित्व बोलता था। उनका जन्म 19 मई 1922 को ग्वालियर (मध्य प्रदेश) में हुआ था। शिक्षा इलाहाबाद में हुई। बहुत दिनों तक इटली में हिन्दी का अध्यापन किया। कार्य क्षेत्र शान्ति निकेतन रहा। शान्ति निकेतन की शीतल छाया में ही उन्हें चिर शान्ति प्राप्त हुई। उन जैसे कर्मठ, आदर्शवादी, शान्त, सौम्य और समर्पित विद्वान् मनीषी के निधन से हिन्दी की अपूरणीय क्षति हुई है।

नरेश मेहता हैं और आगे भी रहेंगे

दूसरे सप्तक के अपने वक्तव्य में **नरेश मेहता** ने कहा था—''जो भी हो, नरेश है और आगे भी रहने को है।'' उनका यह आत्मविश्वास उस उदात्त सांस्कृतिक चेतना के गर्भ से फूटा था जो उनकी रचना का बीज-भाव है। 15 फरवरी, 1922 राजापुर (म०प्र०) में जन्मे श्री नरेश मेहता ने साहित्य की सभी विधाओं को समृद्ध किया है। दूसरा सप्तक (सं० अज्ञेय 1951) से अपनी पहचान कायम करने वाले श्री मेहता की काव्य-कृतियाँ हैं—वनवासी सुनो (1957), बोलने दो चीड़ को (1962), मेरा समर्पित एकान्त (1963), उत्सवा (1974), तुम मेरा मौन हो (1982), अरण्या (1985), आखिर समुद्र से तात्पर्य (1988), पिछले दिनों नंगे पैरों (1990), देखना एक दिन (1990)। यह कृतियाँ प्रमाण हैं कि उनकी रचना-यात्रा में नैरन्तर्य है। नैरन्तर्य इस अर्थ में नहीं कि वे निरन्तर लिखते रहे हैं। नैरन्तर्य इस अर्थ में कि वे चीजों को नये सन्दर्भ में नया अर्थ देने की कोशिश करते रहे हैं। संशय की एक रात (1962), महाप्रस्थान (1965), प्रवाद पर्व (1977), प्रार्थना पुरुष (1986), शबरी (1987), चैत्या (1993) आदि आपकी प्रबन्धात्मक रचनाएँ हैं। यह रचनाएँ आपकी उदात्त मानवधर्मिता की साक्षी हैं। धूमकेतु एक श्रुति (1963), डूबते मस्तूल (1944), यह पथ बंधु था (1962), नदी यशस्वी है (1964), दो एकान्त (1965), प्रथम फाल्गुन (1966), उत्तर कथा दो खण्डों में (1980-84) आदि उपन्यासों की रचना करके आपने हिन्दी कथा-साहित्य में अपनी अलग पहचान बनाई है। इनके अतिरिक्त आपने कहानी, यात्रावृत्त, संस्मरण, नाटक, समीक्षा आदि विधाओं को भी समृद्ध किया है। श्री मेहता केन्द्रीय 'साहित्य अकादमी पुरस्कार', उ०प्र० शासन के 'भारत भारती' सम्मान, म०प्र० शासन के 'शिखर सम्मान' और भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि से सम्मानित होकर हिन्दी-साहित्य के शिखर पुरुष के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ गए हैं। गत 22 नवम्बर 2000 को (रात्रि में) आपका देहावसान हो गया। आप पिछले कुछ महीनों से अस्वस्थ थे। आपके निधन से निस्सन्देह हिन्दी साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई है। यह क्षति इस अर्थ में अपूरणीय है कि पुरातन के सारतत्त्व से नवीन का सृजन करने वाले रचनाकार विरल हैं। श्री मेहता ऐसे ही रचनाकार थे। उन्होंने कभी लिखा था—

मानव जिस ओर गया, नगर बने तीर्थ बने।
तुम से है कौन बड़ा? गगन सिंधु मित्र बने॥
भूमि का भोगो सुख, नदियों का सोम पियो।
त्यागो सब जीर्ण वसन,
नूतन के सँग-सँग चलते चलो।

लगता है श्री मेहता अपना जीर्ण शरीर त्याग कर नवीन की खोज में मिली नई दिशा में प्रस्थान कर गए हैं। वे मरे नहीं हैं, 'हैं' और आगे भी रहेंगे।

गाँधीवादी विचारक यशपाल जैन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी को समर्पित **यशपाल जैन** का 10 अक्टूबर को अपराह्न दो बजे नागदा (मध्यप्रदेश) में लम्बी बीमारी के बाद अस्पताल में निधन हो गया। 88 वर्षीय यशपाल जैन का जन्म अलीगढ़ में विजयगढ़ कस्बे में 1 सितम्बर 1912 को हुआ था। यशपाल जी ने अनेक उपन्यास, कहानी, निबन्ध, संस्मरण, यात्रा वृत्तांत, नाटक तथा कविताएँ लिखीं। सरकार ने उन्हें पद्मश्री से अलंकृत किया। उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने उन्हें साहित्य भूषण की उपाधि प्रदान की। अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने उन्हें साहित्य वाचस्पति से सम्मानित किया। यशपालजी सस्ता साहित्य मण्डल के मंत्री थे और मण्डल की पत्रिका 'जीवन साहित्य' का सम्पादन करते थे। उन्होंने सस्ता साहित्य मण्डल ऐसी संस्था को अपनी कृतियों तथा विशिष्ट प्रकाशनों से गरिमा प्रदान की। साहित्य के क्षेत्र में ऐसे गाँधीवादी विचारक के निधन से शून्यता व्याप्त हो गई।

क्रान्तिकारी साहित्यकार

मन्मथनाथ गुप्त

प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ने संवेदना व्यक्त करते हुए कहा—''देश ने एक ऐसा महान् स्वतंत्रता सेनानी खो दिया, जिसने ब्रिटिश शासन काल में अपने जीवन के बीस साल जेल की अँधेरी कोठरी में गुजारे।'' 1908 ई० काशी में जन्मे **मन्मथनाथ गुप्त** का दिल्ली में 26 अक्टूबर को निधन हो गया। गुप्तजी काशी विद्यापीठ की परम्परा के गौरवशाली नक्षत्र थे। 'क्रान्ति युग के संस्मरण' (1937 ई०), 'भारत के सशस्त्र क्रान्तिकारी चेष्टा का इतिहास' (1939 ई०), 'बहता पानी' उपन्यास (1955 ई०), 'कथाकार प्रेमचंद' (1946 ई०), प्रतिवाद की रूपरेखा (1950 ई०), 'साहित्य, कला, समीक्षा' (1954 ई०) आदि आपकी प्रमुख कृतियाँ हैं। आपकी प्रतिभा क्रान्ति और साहित्य दोनों में सक्रिय रूप से समर्पित रही। 'क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास' तथा 'भगत सिंह ऐण्ड हिज टाइम्स' आपकी स्मारक कृतियाँ हैं। ऐसे योद्धा साहित्यकार को काशी के साहित्यकारों की विनम्र श्रद्धांजलि।

हृषीकेश

गाजीपुर निवासी वरिष्ठ कथाकार एवं आलोचक **हृषीकेश** का 10 नवम्बर को काशी में निधन हो गया। 10 नवम्बर 1932 को जन्मे हृषीकेश ने अपने जन्मदिन 10 नवम्बर 2000 को इहलीला समाप्त की। हृषीकेश युवा साहित्यकारों की प्रेरणा थे। पूर्वाञ्चल के युवा साहित्यकारों को उनका अभाव खटकता रहेगा।

भोलानाथ गहमरी

भोजपुरी गीतकार **भोलानाथ गहमरी** जो कैन्सर से पीड़ित थे, का गाजीपुर में 8 दिसम्बर, 2000 को निधन हो गया। 15 दिसम्बर 1923 को गाजीपुर जिले के गहमर गाँव में जन्मे गहमरी जी का पहला गीत संग्रह 'बयार पुरुवइया' की भूमिका आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने लिखी थी। गहमरीजी की अन्य रचनाओं में 'अँजुरी भर मोती', 'रागिनी', 'मौलश्री', लोहे की दीवार (नाटक) प्रमुख हैं। उनके निधन से भोजपुरी साहित्य के मौलिक रचयिता का स्थान रिक्त हो गया। हमारी विनम्र श्रद्धांजलि।

भारत इतना भावहीन कभी नहीं था, जितना आज है। मानसिक दृष्टि से परतंत्रता के पंकिल में डूबे-सने भारतीयों को ध्यान दिलाना है कि वे स्वतंत्र देश के नागरिक हैं, उनकी अपनी अस्मिता है, उनकी भाषाओं में शक्ति है और वे अनुवाद के सहारे के बिना भी अपनी बात कह सकते हैं। भ्रष्टाचार स्नात राजनीतिज्ञ नहीं कर सके। आपकी पत्रिका के अग्रलेख 'भारतीय अस्मिता के विध्वंसक मैकाले' से यही ध्वनित होता है। साहित्यकार-प्रकाशक को यह मिलकर करना चाहिए। **—डॉ० पवनकुमार**
राजभाषा अधिकारी, राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड, आणंद

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी की महत्त्वपूर्ण कृतियाँ

अर्थविज्ञान और व्याकरण दर्शन
(अर्थविज्ञान-विषयक प्रामाणिक शोधग्रन्थ)

यह भाषाशास्त्रीय प्रामाणिक शोधग्रन्थ है। इसमें अर्थविज्ञान (Semantics) विषय पर भारतीय वैयाकरणों के गहन चिन्तन का विशद विवेचन है। पतंजलि के महाभाष्य और भर्तृहरि के वाक्यपदीय का गहन अनुशीलन है। साथ ही अन्य दार्शनिकों के मन्तव्यों का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें 9 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का वर्णन है— शब्द और अर्थ का स्वरूप, अर्थ-विकास, अर्थनिर्णय के साधन, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, शब्दशक्ति, पद और पदार्थ, वाक्य और वायार्थ, स्फोटवाद और अर्थविज्ञान।

पृष्ठ संख्या 370 + 30 मूल्य : 400 रुपये

वैदिक साहित्य एवं संस्कृति
(संस्कृत एम०ए० एवं आचार्य आदि के लिए)

यह वैदिक साहित्य-विषयक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसमें वैदिक साहित्य का सर्वांगीण विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही वेदकालीन संस्कृति का भी संक्षिप्त विवेचन किया गया है। इसमें 13 अध्यायों में मुख्य रूप से इन विषयों का प्रतिपादन है— वेदों का महत्त्व, वेदों का रचनाकाल, वेद और भारतीय एवं पाश्चात्त्य विद्वान्, वैदिक संहिताएँ, ब्राह्मण ग्रन्थ, आरण्यक ग्रन्थ, उपनिषद् ग्रन्थ, 6 वेदांग— शिक्षा, व्याकरण, छन्द, निरुक्त, ज्योतिष एवं कल्पसूक्त, वैदिक संस्कृति, भूगोल एवं सामाजिक जीवन, वैदिक अर्थव्यवस्था, वैदिक राजनीतिक अवस्था, वैदिक देवों का स्वरूप, वैदिक यज्ञमीमांसा, वैदिक व्यारकण, स्वरप्रक्रिया, वेदों में विज्ञान के सूक्त, वेदों में काव्यसौन्दर्य और ललित कलाएँ।

पृष्ठ सं० 370 + 16 मूल्य : सजिल्द 250 रुपये
छात्र संस्करण 125 रुपये

संस्कृत-निबन्ध-शतकम्
(एम०ए०, आई०ए०एस०, पी०सी०एस०, आचार्य आदि के लिए)

इसमें सरल एवं सुललित भाषा में उच्चस्तरीय परीक्षाओं के लिए उपयुक्त 100 विषयों पर संस्कृत में निबन्ध दिए गए हैं। इसमें वैदिक एवं शास्त्रीय विषयों पर 10, दार्शनिक विषयों पर 6, काव्यशास्त्रीय 11, साहित्यिक 15, भाषाशास्त्रीय 5, सांस्कृतिक 9, सामाजिक 5, आर्थिक 6, राष्ट्रीय 8, शिक्षाशास्त्रीय 8 एवं विविध विषयों पर 20 निबन्ध दिए गए हैं। पुस्तक सभी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

पृष्ठ संख्या 324 मूल्य : 80 रुपये

संस्कृत व्याकरण एवं लघु-सिद्धान्त-कौमुदी

संस्कृतभाषा के व्याकरण के ज्ञान के लिए यह सर्वोत्तम ग्रन्थ है। इसमें भूमिका में संस्कृत व्याकरणशास्त्र का विस्तृत इतिहास दिया गया है, सम्पूर्ण लघु-सिद्धान्तकौमुदी हिन्दी अनुवाद और विस्तृत व्याख्या के साथ दी गई है। सिद्धान्तकौमुदी से कारक-प्रकरण व्याख्या सहित दिया गया है। साथ ही ग्रन्थ की उपयोगिता को बढ़ाने के लिए संक्षिप्त वैदिक व्याकरण, स्वर-सम्बन्धी नियम, वैदिक छन्द-परिचय, संक्षिप्त प्राकृत व्याकरण और पारिभाषिक शब्दकोश भी दिया गया है। संस्कृत व्याकरण की सरल और वैज्ञानिक व्याख्या के लिए यह ग्रन्थ आदर्श है।

पृष्ठ संख्या 560 मूल्य : सजिल्द 200 रुपये
अजिल्द 140 रुपये

भाषा विज्ञान एवं भाषाशास्त्र
(संस्कृत तथा हिन्दी एम०ए० के लिए)

इसमें भाषाशास्त्रीय नवीनतम अनुसंधानों का समन्वय करते हुए भाषाविज्ञान और भाषाशास्त्र का प्रामाणिक एवं सारगर्भित विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इसमें भाषा, ध्वनि-विज्ञान, पद-विज्ञान, वाक्य-विज्ञान, अर्थविज्ञान, विश्व की समस्त भाषाओं का आकृतिमूलक एवं पारिवारिक वर्गीकरण, भारोपीय परिवार, भारतीय अर्थभाषाएँ, स्वनिम, पदिम, रूपिम, आर्थिक, स्वनिम-विज्ञान, भाषाशास्त्र का इतिहास एवं लिपि का इतिहास आदि विषयों का प्रामाणिक विवेचन हुआ है। पुस्तक सभी विश्वविद्यालयों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर लिखी गई है। पृष्ठ संख्या 525

मूल्य : सजिल्द 200 रुपये अजिल्द 120 रुपये

प्रौढ-रचनानुवाद कौमुदी
(एम०ए० और आचार्य के छात्रों के लिए)

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है, इसमें 300 नियमों और 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में समस्त संस्कृत व्याकरण की शिक्षा दी गई है, इसमें 100 शब्दरूप, 100 धातुओं के 10 लकारों के रूप, धातुरूपकोश, प्रत्यय-विचार, संधि विचार, संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश आदि का संकलन है। प्रौढ संस्कृत लिखने के ज्ञान के लिए यह आदर्श ग्रन्थ है। इसकी लगभग 60 हजार प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

पृष्ठ संख्या 440 + 12 मूल्य : 80 रुपये

रचनानुवाद-कौमुदी
(इण्टरमीडिएट, बी०ए० और शास्त्री के छात्रों के लिए)

यह वैज्ञानिक पद्धति से लिखी गई संस्कृत व्याकरण, अनुवाद और निबन्ध की आदर्श पुस्तक है। इसमें 200 नियमों एवं 1500 शब्दों के द्वारा 60 अभ्यासों में संस्कृत व्याकरण के विशेष उपयोगी नियमों की शिक्षा दी गई है, इसके अध्ययन से सामान्य हिन्दी-ज्ञान वाला व्यक्ति भी 3 या 4 मास में सरल संस्कृत लिख और बोल सकता है। इसमें बी०ए० स्तर तक के लिए उपयोगी सभी शब्दरूप और धातुरूप दिए गए हैं, साथ ही संक्षिप्त धातुकोश, प्रत्ययविचार, संधिविचार, 20 सरल संस्कृत में निबन्ध, छन्द-परिचय और पारिभाषिक शब्दों का विवरण दिया गया है। इसकी 2 लाख से अधिक प्रतियों का बिकना इसकी लोकप्रियता का परिचायक है।

पृष्ठ संख्या 272 + 16 मूल्य : 45 रुपये

हिन्दी-पत्रिकाएँ

अक्षरा

'अक्षरा' त्रैमासिक साहित्यिक पत्रिका है। मध्य प्रदेश राष्ट्रभाषा प्रचार समिति की यह पत्रिका है। 'अक्षरा' का यह 50वाँ अंक हमारे समक्ष है जो आलोचना विशेषांक के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

आलोचना साहित्य के विकास का सहज माध्यम है। आलोचक किसी भी रचना का सही ढंग से उसके गुण और दोषों सहित पाठकों को जानकारी देता है तब पाठकों का उस रचना के प्रति सहज आकर्षण होता है। पाठक उस रचना को पढ़ता है। इस प्रकार साहित्य लेखक से चलकर पाठक तक पहुँचता है। हिन्दी आलोचना जो स्वातंत्रोत्तर विकसित हुई है, उसमें साहित्य मंथन का अभाव है। हिन्दी आलोचना विभिन्न खेमों, विभिन्न विचारधाराओं और गुटों में विभक्त है। इस तरह सम्यक् समीक्षा का अभाव दिखाई पड़ता है। समीक्षा का मतलब किसी रचनाकार या किसी रचना, या किसी समीक्षा शैली या किसी गुट विशेष के रचनाकार आदि को उभारना या गिराना नहीं है। वस्तुत: किसी रचना का मंथन कर उसके गुण और दोषों को उजागर कर उसकी सम्पूर्णता को प्रस्तुत किया जाना चाहिये। आलोचक की भूमिका रचना और रचनाकार के मध्य सेतु की होनी चाहिये। इससे रचना की पाठकीयता बढ़ेगी।

अक्षरा के प्रस्तुत अंक आलोचना-विशेषांक का उद्देश्य किसी रचना के सम्पूर्ण पक्षों का विवेचन कर पाठकों के समक्ष उपस्थित करना है। इस दिशा में प्रस्तुत अंक में हिन्दी की प्रमुख विधाओं, आलोचना, कविता, कहानी, उपन्यास, निबन्ध, नाटक, यात्रा साहित्य आदि पर हिन्दी के प्रमुख समीक्षकों के विचार यहाँ प्रस्तुत किये गये हैं। साथ ही उनकी विभिन्न विधाओं की रचनाओं पर आलोचना प्रस्तुत की गयी हैं। 'अक्षरा' का अपने ढंग का बहुत ही अच्छा प्रयास है।

इस अंक में यात्रा साहित्य की समीक्षा करते हुए पाठकों की जानकारी के लिए स्वातंत्रोत्तर प्रकाशित 136 यात्रा साहित्य की सूची दी गयी है। यह पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी तो है ही साथ ही यात्रा साहित्य की विकास यात्रा का भी संकेत है, जो उत्साहवर्धक है। आशा है, अक्षरा के माध्यम से पाठकों को हिन्दी आलोचना के सम्बन्ध में नयी दृष्टि मिलेगी।

गगनाञ्चल

भारत सरकार हिन्दी के विकास के लिए और उसके प्रचार-प्रसार के लिए न केवल देश में बल्कि विश्व के विभिन्न देशों में प्रयासरत है। हिन्दी के माध्यम से न केवल प्रचार-प्रसार होता है बल्कि भारत और अन्य देशों के बीच सांस्कृतिक चेतना मजबूत होती है। इसी दृष्टि को ध्यान में रखकर भारत सरकार ने विदेश मन्त्रालय के अन्तर्गत भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद स्वायत्त संगठन स्थापित किया है। यह संस्था 1950 में गठित हुई थी जिसके अन्तर्गत विभिन्न भाषाओं में सात त्रैमासिक पत्रिकाएँ प्रकाशित की जाती हैं। हिन्दी में **'गगनाञ्चल'** त्रैमासिक पत्रिका प्रकाशित की जाती है।

'गगनाञ्चल' 264 पृष्ठों की उच्चस्तरीय पत्रिका है। इसमें चिन्तन, स्मरण, आलोचना विवेचन, निबन्ध, कहानी, उपन्यास का धारावाहिक अंश, गजल/कविता/गीत, हास्य व्यंग्य, यात्रा वृत्तान्त, कला संस्कृति, समीक्षा आदि पर एक साथ सामग्री प्रस्तुत की जाती है। हिन्दी जगत में सम्भवत: अपने ढंग की यह अकेली पत्रिका है, जो साहित्य की सभी विधाओं पर एक साथ सामग्री प्रस्तुत करती है। इसके साथ ही विदेशों में हिन्दी की गतिविधियों पर भी इस पत्रिका में जानकारी प्रस्तुत की जाती है।

प्रस्तुत अंक (वर्ष 23, अंक 2 : अप्रैल-जून 2000) में सार्क देशों को केन्द्र में रखकर भी कुछ सामग्री दी गयी है, जो अत्यन्त उपयोगी है। कबीर की आवश्यकता, हिन्दूकाल गणना, कमलेश्वर जी का लेख सम्मिलित संस्कृति के वाहक हैं, हमारे। दक्षेस देश, विदेश में हिन्दी पत्रकारिता, सफरनामा चेन्नई से पोर्टब्लेयर आदि लेख उच्चस्तरीय लेखन है और पठनीय है। यह पत्रिका भारत का विभिन्न देशों से साहित्य और संस्कृति के माध्यम से सांस्कृतिक सम्बन्ध बनाने में पूर्ण सक्षम है, वहीं हिन्दी पत्रकारिता का मानरूप स्वरूप भी स्थापित करती है।

ऐसी उत्तम कोटि की पत्रिका के सम्पादन और प्रकाशन के लिए सम्पादक और परिषद दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

तद्भव

'तद्भव' हिन्दी की त्रैमासिक पत्रिका है। पत्रिका का चौथा अंक प्रस्तुत है। तीन अंकों में ही इस पत्रिका ने अपना उच्च स्थान प्राप्त कर लिया है। यह पत्रिका आधुनिक रचनाशीलता पर केन्द्रित विशिष्ट रचनाओं का संकलन है। यह पत्रिका केवल समीक्षात्मक ही नहीं वरन् रचनात्मक लेखों के कारण अत्यन्त आकर्षक और पठनीय बन गयी है।

रवीन्द्र कालिया की कहानी बुढ़वा मंगल और कुँवरनारायण की कविता शान्ति वार्ता विशेष पठनीय और आकर्षक है। कुँवरनारायण की कविता शान्तिवार्ता की ये पंक्ति सहज ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए विवश करती है—

अल्ला हो अकबर/विनती है भगवन्/
अगर दो तो अुणबम/न ये गन न वो गन/

आज हिन्दी में अभिव्यक्ति की अजब बेचैनी है। छोटे-छोटे नगरों से, कस्बों से अनियतकालीन, त्रैमासिक, मासिक अनेक पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं। आधुनिकता के युग में सभी अपनी पहचान बनाये रखने को व्यग्र हैं। इन पत्रिकाओं में अनेक पत्रिकाएँ अति महत्त्वपूर्ण है। समय-समय पर उपलब्ध पत्रिकाओं की परिचयात्मक समीक्षा भी प्रकाशित की जाती है।

प्रकाशित पत्रिकाएँ

सुधारक (त्रैमासिक)
सम्पादक : दिवाकर
सम्पर्क, मोहनी भवन, खरे टाउन, धरमपेठ नागपुर
(एक अंक 10.००, वार्षिक 40.००)

उलुपी (वार्षिकांक)
सम्पादक : रविशंकर रवि
सम्पर्क, थामस बिल्डिंग, पुब सरजिया गुवाहाटी-781003 (एक प्रति 15.००)

आधारशिला (त्रैमासिक)
सम्पादक : दिवाकर भट्ट
सम्पर्क, बड़ी मुखानी, हलद्वानी-263139
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 100.00)

पत्रकार सदन (त्रैमासिक)
सम्पादक : अफजाल अंसारी
सम्पर्क, सी०पी० 13, प्रेस इन्क्लेव, सेक्टर-सी अलीगंज, लखनऊ (एक प्रति 15.00)

अर्थात् (त्रैमासिक)
सम्पादक : मनोजकांत
सम्पर्क, 42 निमावां रोड, फैजाबाद-1
(एक प्रति 20.00)

पहल (त्रैमासिक)
सम्पादक : ज्ञानंजन
सम्पर्क, 101 रामनगर, आधारताल, जबलपुर
(एक प्रति 30.00, वार्षिक 120.00)

सर्वनाम (त्रैमासिक)
सम्पादक : विष्णुचन्द्र शर्मा
सम्पर्क, ई-11, सरदतपुर, दिल्ली-94
(एक प्रति 10.00, वार्षिक 40.00)

इसबार (त्रैमासिक)
सम्पादक : मधुकर सिंह
सम्पर्क, धरहरा, आरा (बिहार)
(एक प्रति 15.00, वार्षिक 50.00)

प्रिय सम्पादक (मासिक)
सम्पादक : मोहन थपलियाल
एल० 5/185, अलीगंज, लखनऊ

वसुधा (अर्द्धवार्षिक)
सम्पादक : कमलाप्रसाद
सम्पर्क, एम० 31, निरालानगर, भदभदा रोड भोपाल-3 (एक प्रति 40.00)

संदर्श (त्रैमासिक)
सम्पादक : सुधीर विद्यार्थी
सम्पर्क, चंदनगंध, निकट बड़ा पावर हाउस बीसलपुर, पीलीभीत
(एक प्रति 10.00, वार्षिक 40.00)

शेष अगले पृष्ठ पर

लड़ाकू विमानम्/ न अन्नम् न वस्त्रम्/
करे शास्त्र चर्चा/मगर होड़ शस्त्रम्/

मनोहरश्याम जोशी का लखनऊ मेरा लखनऊ और देवी ब्रांस्क अवस्थी का पत्नी के नाम पत्र आकर्षक रचनाएँ हैं। रामविलास शर्मा का महत्त्व उनके विचारों पर गम्भीरतापूर्वक प्रकाश डालने वाली रचना है।

सम्पादक के नाम पत्र समाचार पत्र या पत्रिका के लिए महत्त्वपूर्ण कालम या पृष्ठ होता है। इस पत्रिका में 'मत' के अन्तर्गत शीला संधू की नामवर सिंह के लेख पर व्यक्त प्रतिकिया अत्यन्त विचारोत्तेजक और पठनीय है। इससे अनेक तथ्य सामने आते हैं। ३०८ पृष्ठ की इस पत्रिका में सम्पादक ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।

छोटी-पत्रिकाएँ

कई 'करोड़पति' साहित्यसेवी साहित्य के क्षेत्र में अलग से मूल्यवान हो उठे हैं। वे साहित्य के नये 'फायनेंसर' हैं। उनके ठीक पीछे 'साहित्य प्रेमी' सरकारी अफसर देखे जा सकते हैं जो साहित्य-सेवा करने को उद्धत किसी न किसी पत्रिका के वित्तमंत्री होते हैं। तीसरे पायदान पर—डॉक्टर, अध्यापक, वकील, पत्रकार आदि होते हैं जो अतिरिक्त साधन मुहैया करते हैं। हिन्दी की साहित्यिक पत्रकारिता की यह 'नेटवर्किंग' हिन्दी जाति में विकसित हो रहे नये मध्यवर्ग का ही प्रतिबिम्ब है। यही साहित्य का 'एलीट' बनता बिगड़ता है। यही संवेदनशील तबका होता है।

पुराने वक्त में साहित्य और उसकी पत्रकारिता, अन्य संघर्षकारी क्रियाओं की तरह ही 'उत्तम बलिदान' का गौरवशाली भाव लिए दिए चलती थी। आजादी के बाद के दिनों में बड़े प्रेस ने हिन्दी में कुछ बड़ी साहित्यिक पारिवारिक पत्रिकाएँ निकालीं। तब भी साहित्यिक पत्रकारिता अलग प्रक्रिया की तरह चलती रही। आजादी प्राप्ति के बाद, साहित्यिक पत्रकारिता, अधिक स्वायत्त हुई, साहित्य केन्द्रित हुई।

अब छोटी पत्रिका और बड़ी पत्रिका का भेद मिट गया है। बड़ी पत्रिका नहीं रही। दैनिक पत्रों ने साहित्य संस्कृति को अपने परिशिष्टों में जगह दी है। लेकिन, अब भी वे तुच्छ यश: प्रार्थी साहित्यिक रुचियों की मंच बनी हुई हैं। वहाँ अपने काम को आगे बढ़ाने की वैचारिक चिन्ताओं का अभाव है। **—सुधीश पचौरी**

नागरीलिपि में गज़लों का विश्वकोष

डॉ० राज निगम ने नागरी लिपि में 'गज़लनामा' शीर्षक से गज़लों का 7 खण्डों में लगभग 3500 पृष्ठों में विश्वकोष प्रकाशित किया है। इन सात खण्डों में से एक खण्ड 'उर्दू-हिन्दी-अंग्रेजी शब्दकोष' है।

गज़लनामा के पहले खण्ड में गजल के विकास और लोकप्रियता पर कई लेख हैं। इसमें गज़ल की विधा को दिल्ली, लखनऊ, हैदराबाद और लाहौर की रवायतों का विशेष रूप से उल्लेख है। इसमें गज़ल पर भी कई लेख हैं, जिनसे उर्दू और गज़ल विधा से अनभिज्ञ लोगों को इसकी बारीकियाँ समझने में मदद मिल सकती है।

दूसरे खण्ड में उर्दू गज़ल के ग्यारह सर्वश्रेष्ठ रचनाकारों के कलाम संकलित किए गए हैं, जिसमें मीर तकी मीर, गालिब, मोमिन इकबाल, मोहानी, जिगर, फिराक, फैज, मजरूह, नजीर और अली सरदार जाफरी शामिल हैं।

तीसरे और चौथे खण्ड में अन्य महत्त्वपूर्ण गज़लकारों के कलाम शामिल किए गए हैं। इनमें पाकिस्तान के अख्तर शीरानी, अहमद फराज, नासिर काजमी और बांग्लादेश के हिमायत अली प्रमुख हैं।

गज़लनामा के पाँचवें खण्ड में करीब ढाई हजार ऐसे शेर दिए गए हैं, जो अक्सर लोगों की जुबान पर रहते हैं। विश्वकोष में शब्दों के अलावा शायरों के चित्र भी हैं। उन गायकों के चित्र भी संग्रह में शामिल किए गए हैं, जिन्होंने गज़लें गाई हैं।

विश्व भोजपुरी सम्मेलन

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय के भारतीय भाषा केन्द्र के अध्यक्ष गंगाप्रसाद विमल ने विश्व भोजपुरी सम्मेलन के अन्तिम सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि हिन्दी का भोजपुरी से कोई विरोध नहीं है। अंग्रेजी के खिलाफ लड़ाई में भारतीय भाषाओं के साथ-साथ भोजपुरी जैसी क्षेत्रीय भाषाओं को भी साथ लेकर चलने की जरूरत है। इसलिए उसे संविधान में जगह मिलनी ही चाहिए और साहित्य अकादमी पुरस्कार भी शुरू होना चाहिए। देशभर में करीब 12 करोड़ लोग भोजपुरी बोलते हैं। यह एक जनभाषा है। लोकतन्त्र में जनभावना की उपेक्षा नहीं की जा सकती। हिन्दी अन्तरराष्ट्रीय भाषा नहीं है पर भोजपुरी है। उनका कहना है कि जब नेपाली, कोंकणी और डोगरी में साहित्य अकादमी पुरस्कार दिये जा सकते हैं तो भोजपुरी में क्यों नहीं? ये तीनों भाषाएँ तो कुछ लाख लोग ही बोलते हैं। हिन्दी कवि केदारनाथ सिंह भी भोजपुरी को संविधान में शामिल किये जाने के पक्ष में हैं पर वह भोजपुरी की सीमाओं और उसकी समस्याओं की तरफ भी इशारा करते हैं। उनका कहना है कि भोजपुरी के सामने बड़ी समस्या मानकीकरण की है। विवेकी राय जैसे लोगों ने भोजपुरी में कुछ अच्छे उपन्यास लिखे हैं लेकिन अभी भोजपुरी में अच्छे गद्य साहित्य का अभाव है। कई नये लोग कहानियाँ लिख रहे हैं पर ज्यादातर लोग अज्ञात हैं। वैसे भोजपुरी साहित्य का इतिहास लिखे जाने की भी जरूरत है। उनका कहना है कि भोजपुरी में भिखारी ठाकुर जैसे लोग पैदा हुए जिन्हें महापण्डिल राहुल सांकृत्यायन जैसे महान लेखक ने भोजपुरी के शेक्सपीयर की संज्ञा दी।

तेवर (त्रैमासिक)
सम्पादक : कमलनयन पाण्डेय
सम्पर्क, 1587/1, उदय प्रताप कालोनी
सिविल लाइन्स-2, सुल्तानपुर
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 60.00)

मुक्तिपर्व (त्रैमासिक)
सम्पादक : शशिभूषण द्विवेदी
सम्पर्क, नेहांगन, अग्रसेन नगर
रुद्रपुर (ऊधम सिंह नगर)
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 70.00)

माजरा (त्रैमासिक)
सम्पादक : हेतु भारद्वाज
सम्पर्क, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति
हिन्दी भवन, आगरा रोड, जयपुर
(एक प्रति 10.00, वार्षिक 100.00)

आइना (त्रैमासिक)
सम्पादक : मंजु शुक्ला
20 गोपालनगर, आलमबाग, लखनऊ
(एक प्रति 20.00)

परख (प्रवेशांक)
सम्पादक : मण्डलकृष्ण मोहन
सम्पर्क, एल०आई०जी०, जी० 81-ए
एडी कालोनी, रसूलाबाद, इलाहाबाद
(एक प्रति 20.00)

परिचय (प्रवेशांक, अर्द्धवार्षिक)
सम्पादक : श्रीप्रकाश शुक्ल
सम्पर्क, बड़ा महादेव कालोनी, पीरनगर
गाजीपुर
(एक प्रति 25.00)

समकालीन भोजपुरी साहित्य (कहानी विशेषांक)
सम्पादक : अरुणेश नीरन
प्रकाशक : विश्व भोजपुरी सम्मेलन, देवरिया
(एक प्रति 15.00, वार्षिक 50.00)

बोली बानी (मासिक)
सम्पादक : जगदीश पीयूष
प्रकाशक : अवधी अकादमी, गौरीगंज
सुल्तानपुर
(एक प्रति 25.00)

संभवा (त्रैमासिक)
सम्पादक : ध्रुवनारायण गुप्त
सम्पर्क, क्वार्टर नं० 4, पुरानी पुलिस लाइन
गाँधी मैदान के अन्दर, पटना-11 या
इमामगंज मिश्र टोला, मुजफ्फरपुर-1
(एक प्रति 20.00, वार्षिक 70.00)

समयांतर (मासिक)
सम्पादक : पंकज बिष्ट
संपर्क, 79 ए, दिलशाद गार्डन
दिल्ली-95
(एक प्रति 5.00, वार्षिक 60.00)

सत्यशोधक संवाद (दलित विमर्श पत्रिका)
सम्पादक : सुरेश पंजय
संपर्क, डी० 157/5
राज्य विद्युत परिषद कालोनी
इन्दिरा नगर, लखनऊ
(एक प्रति 10.00)

प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा

डॉ० राजीव सिंह

एक सौ चालीस रुपये

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी और आचार्य नंददुलारे वाजपेयी के बाद डॉ० रामविलास शर्मा ने हिन्दी आलोचना को जिस ऊँचाई पर पहुँचाया है, उसका विवेचन और विश्लेषण किए बगैर आगामी विकास का मार्ग प्रशस्त नहीं हो सकता। डॉ० राजीव सिंह की पुस्तक इसी दिशा में एक अच्छा प्रयास है। इसकी सजीव विवेचन शैली और अकादमिक घिसे-पिटेपन से मुक्त, विचारोत्तेजक भाषा बरबस हमारा ध्यान आकृष्ट करती है। भक्ति काव्य, रीतिकाव्य, छायावादी काव्य, प्रगतिशील काव्यधारा और नई कविता के साथ-साथ आधुनिक कथा साहित्य और आलोचना के सम्बन्ध में डॉ० शर्मा के विचारों का विवेचन करते हुए डॉ० राजीव सिंह ने एक ओर डॉ० शर्मा की मौलिक स्थापनाओं की युक्तियुक्त व्याख्या की है तो दूसरी ओर उनके अन्तर्विरोधों को भी रेखांकित किया है। इस पुस्तक में हिन्दी जाति और मार्क्सवादी सौन्दर्यशास्त्र सम्बन्धी डॉ० शर्मा की स्थापनाओं का भी विवेचन प्रस्तुत है। इस पुस्तक के अन्त में डॉ० शर्मा की अन्तिम पुस्तक 'भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश' की भी सार-समीक्षा समेट ली गई है। डॉ० शर्मा के आलोचना-कर्म का यह अपने ढंग का समग्र विवेचन है।

—डॉ० अवधेश प्रधान

वाग्द्वार

प्रो० कल्याणमल लोढ़ा

दो सौ पचास रुपये

प्रो० लोढ़ा बहुश्रुत प्रज्ञा पुरुष हैं। 'वाग्द्वार' के दस निबन्धों में उन्होंने हिन्दी-काव्य के 'अष्टछाप' की मौलिकता की मर्मस्पर्शी व्याख्या प्रस्तुत की है। इसमें पिष्टपेषण नहीं, नवोन्मेष है। कवियों के व्यक्तित्व और कृतित्व दोनों का अन्तर्दर्शन भी। हिन्दी काव्य को इतने व्यापक पटल पर बहुत कम आलोचक देख-परख पाये हैं। **—प्रो० सिद्धेश्वरप्रसाद**

भूतपूर्व राज्यपाल, त्रिपुरा

भारतीय संस्कृति और परम्परा के नए गवाक्ष खोलने वाले महत्त्वपूर्ण रचनाकारों की समीक्षा इसमें प्रस्तुत की गई है। **—नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद**

प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन

डॉ० हरिनिवास पाण्डेय

एक सौ पचास रुपये

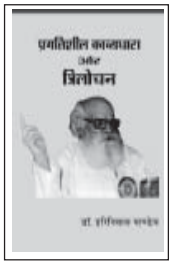

यह हिन्दी जगत् का सौभाग्य है कि प्रगतिशील काव्यधारा की बृहत् त्रयी—नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल और त्रिलोचन—में से कवि त्रिलोचन अब भी हमारे बीच हैं और नए से नए साहित्यकारों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। डॉ० हरिनिवास पाण्डेय ने अपनी इस पुस्तक के द्वारा महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। इसके छह अध्यायों में डॉ० पाण्डेय ने कवि त्रिलोचन के जीवन संघर्ष से लेकर उनकी काव्य-वस्तु और काव्य-कला तक का विवेचन किया है। त्रिलोचन के काव्यशिल्प का, सॉनेट और ग़ज़ल जैसे काव्य प्रयोगों का, भाषा-कौशल और छंद-योजना का विवेचन करके डॉ० पाण्डेय ने पुस्तक को अपनी ओर से भरा-पूरा बनाने की भरपूर कोशिश की है। **—डॉ० अवधेश प्रधान**

संसद और संवाददाता

ललितेश्वरप्रसाद श्रीवास्तव

नवभारत टाइम्स, नई दिल्ली के प्रमुख संसदीय संवाददाता

एक सौ बीस रुपये

संसदीय कार्यप्रणाली का विवरण तथा विश्लेषण, प्रक्रियाओं और नियमों की जटिलता को बोधगम्य बनाने का प्रयास संसद की दोनों सभाओं में अंतर। संसदीय कार्यप्रणाली तथा संसदीय रिपोर्टिंग पर महत्त्वपूर्ण पुस्तक। पत्रकारों के साथ-साथ संसद सदस्यों के लिए अत्यन्त उपयोगी।

वैदिक साहित्य और संस्कृति

डॉ० कपिलदेव द्विवेदी

छात्र संस्करण : 125.00

दो सौ पचास रुपये

वैदिक संस्कृति का ज्ञान प्रत्येक भारतीय के लिए आवश्यक है। पुस्तक में वैदिक संस्कृति का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। वैदिक भूगोल, सामाजिक जीवन, आर्थिक स्थिति और राजनीतिक स्थिति की विस्तृत समीक्षा है। वेदों में वर्णित भौतिकी, रसायन शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, प्रौद्योगिकी, भूगर्भशास्त्र आदि से सम्बद्ध अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्य दिये गये हैं।

मुट्ठी में बन्द तूफान

अनिन्दिता

पन्चानबे रुपये

यह अनिन्दिता का पहला कहानी संग्रह है, जिसमें कुल ग्यारह कहानियाँ हैं। सभी कहानियाँ अनुभूत सत्य पर आधारित हैं। लेखिका ने जीवन और समाज में व्याप्त विसंगतियों और समस्याओं को बड़ी बारीकी, गहराई और तीखेपन के साथ प्रस्तुत किया है। कहानियों को पढ़ने के बाद भीतर से ध्वनि निकलती है कि—सच कहा।

—राँची एक्सप्रेस

इस संग्रह की सभी कहानियाँ भाव प्रवण एवं रचना सौष्ठव से पूर्ण हैं। प्रत्येक कहानी का निर्वाह इतने कलात्मक ढंग से हुआ है कि वह समस्या के बोझ में दबी नहीं मालूम होगी।

—गाण्डीव, वाराणसी

कला

हंसकुमार तिवारी

एक सौ पचास रुपये

विख्यात छायावादोत्तर कवि और मनीषी लेखक स्वर्गीय हंसकुमार तिवारी की एक विचार-गर्भित और भाव-विदग्ध मर्मस्पर्शी कृति है **कला**।

तिवारीजी की इस कृति को पौरस्त्य और पाश्चात्य समग्र कला चिन्तन का नवनीत कहा जाय तो अत्युक्ति नहीं होगी। कला-सृष्टि के लम्बे ऐतिहासिक दौर के विभिन्न पड़ावों और दृष्टिकोणों एवं विमर्शों का लेखा-जोखा लेते हुए उन्होंने बड़े बेलाग और अर्थ-गर्भित निष्कर्ष दिए हैं। 'सत्यं, शिवं, सुंदरम्' के भारतीय दृष्टिकोण के निकष को ही उन्होंने अपना मानदण्ड बनाया है। सत्य दर्शन का विषय है, शिव धर्म का अनुसंधान है और कला का मूल स्रोत सुन्दर और शोध है। दर्शन ज्ञानमूलक है तो धर्म भक्तिमूलक। कला ज्ञान और भक्ति से पुष्ट होकर अपने सीमित क्षेत्र का अतिक्रमण करती है। 1936 में हिन्दी की कला-विषयक प्रथम उत्कृष्ट कृति मानी गई थी और आज भी यह सबसे उत्कृष्ट कला-विषयक सन्दर्भ ग्रन्थ है। प्रकारांतर से कहें तो उनकी यह कृति कला-विमर्श का अमृत-कलश है। **—नेशनल बुक ट्रस्ट संवाद**

पुराने कपड़े पहनो और नई किताबें खरीदो। **—थोरो**

उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान
द्वारा
आचार्य नरेन्द्रदेव पुरस्कार से
पुरस्कृत

मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण

(7वीं शती से 13वीं शती)

डॉ० मारुतिनंदन तिवारी तथा
डॉ० कमल गिरि

पृष्ठ 16+388
आर्ट पेपर पर हाफ्टोन चित्र
82 पृष्ठ

तीन सौ पच्चीस रुपये

पुस्तक में ब्राह्मण, बौद्ध एवं जैन प्रतिमालक्षण का सम्भवत: पहली बार एक साथ और विस्तारपूर्वक अध्ययन हुआ है जिनमें उनकी तुलनात्मक विशेषताओं को भी रेखांकित किया गया है। तालिकाओं एवं चित्रों के माध्यम से विषय को और भी स्पष्टता प्रदान की गयी है।

उत्तिष्ठ कौन्तेय

हिन्दुत्व एवं आधुनिक विश्व

डॉ० डेविड फ्रॉली
(वामदेव शास्त्री)

अनुवाद
केशवप्रसाद कार्याँ

दो सौ रुपये

इस पुस्तक में संस्कृति के विभिन्न आयामों पर प्रकाश डालते हुए डॉ० फ्राली ने विभिन्न धर्मों और आध्यात्मिक मूल्यों का मार्मिक और निर्भीक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया है। अभारतीय होते हुए भी हिन्दू धर्म के उदात्त तत्त्वों को महत्ता प्रदान करने की आकुलता है। प्रत्येक भारतीय को अपनी अस्मिता से परिचित कराती आध्यात्मिक कृति।

विज्ञान कथा

डॉ० एस०एन० घोष
भूतपूर्व रास बिहारी प्रोफेसर

अस्सी रुपये

आधुनिक विज्ञान एक नये दर्शन का जन्मदाता है। इसने समाज, धर्म, राजनीति, अर्थशास्त्र सभी को प्रभावित किया है। एक ओर मनुष्य के जीवन को सुखमय बनाने का प्रयास किया गया है तो दूसरी ओर विनाश का माध्यम भी बना है। निर्माण और संहार विज्ञान के दो रूप हैं। विज्ञान विनाश के साधन निर्मित करता है, दूसरी ओर उससे बचने का उपाय भी बताता है। विभिन्न क्षेत्रों में किये गये ऐसे वैज्ञानिक प्रयोगों और आविष्कारों की कहानी विज्ञान-कथा का मुख्य विषय है। पुस्तक में देश-विदेश के प्रमुख वैज्ञानिकों और उनके कार्यों का संक्षिप्त परिचय भी दिया गया है।

सामान्य पाठकों तथा विज्ञान के अध्येताओं सभी के लिए सरल, सुबोध शैली में लिखी गयी पुस्तक अत्यन्त ज्ञानवर्द्धक है।

पुलिसकर्मियों की समस्याएँ : समाजवैज्ञानिक अध्ययन

डॉ० विजय प्रताप राय

तीन सौ रुपये

इस पुस्तक में पुलिस बल की नकारात्मक छवि के बारे में गहनता से अध्ययन कर यह जानने का प्रयास किया गया है कि ऐसे वे कौन से कारक हैं जिनके कारण पुलिस बल की कार्यप्रणाली विवादग्रस्त हो गई है। इनकी कार्यप्रणाली तथा इनकी समस्याओं के अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष एवं सुझाव विस्तारपूर्वक दिये गये हैं।

सृजन यज्ञ जारी है

डॉ० अनिलकुमार आंजनेय

सौ रुपये

प्रस्तुत संग्रह 'सृजन यज्ञ जारी है' में 39 यशस्वी आलोचकों तथा समीक्षकों ने सुप्रसिद्ध रचनाकार विवेकी राय के कृतित्व एवं व्यक्तित्व की समीक्षा प्रस्तुत की गयी है।

'सूतो वा सूत पुत्रो वा' के लेखक
डॉ० बच्चन सिंह का नवीनतम उपन्यास

पांचाली : नाथवती अनाथवत

आज स्त्री-मुक्ति आन्दोलन दुनिया भर में अनाहत गति से फल रहा है। वास्तव में इसकी शुरुआत द्रुपद कन्या द्रौपदी ने की थी। रूप, यौवन और वैभव की श्रीसंपन्नता लिए हुए वह पुरुषों द्वारा पदे-पदे अपमानित और लांछित होती रही, पर-पुरुषों द्वारा अपहृत होती रही, पर कभी भी हार नहीं माना। युद्ध के पक्ष में युधिष्ठिर से लड़ती झगड़ती रही पर नियति उसके जीवन को क्रूर त्रासदी में बदल देती है। आज के स्त्री मुक्ति आन्दोलन के संदर्भ में पांचाली की प्रासंगिकता को इसमें रचनात्मक ढंग से उभारा गया—पूरे कथारस के साथ। इसके लेखक डॉ० बच्चन सिंह के उपन्यास 'सूतो वा सूत पुत्रो वा' से आप परिचित हो चुके होंगे। उन्हीं की कलम का यह दूसरा उपन्यास।

आगामी प्रकाशन

भारतीय मनीषा के अग्रदूत
पं० मदनमोहन मालवीय
सं० डॉ० चन्द्रकला पाड़िया
प्राचीन भारतीय शासन पद्धति
प्रो० अनंत सदाशिव अलतेकर
प्राचीन भारतीय कला में मांगलिक प्रतीक
डॉ० विमलमोहिनी श्रीवास्तव
महाभारत का काल निर्णय *डॉ० मोहन गुप्त*
देवभूमि : उत्तराखण्ड *डॉ० गिरिराज शाह, सरिता शाह*
महावतार बाबा हेड़िया खान *एस०पी० श्रीवास्तव*
नीब करौरी बाबा के मधुर दिव्य प्रसंग
रामदास तथा गिरिराज शाह
संस्कृत साहित्य का अभिनव इतिहास
डॉ० राधा बल्लभ त्रिपाठी
वाग्सिद्धि *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*
वाग्दोह *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा*
कबीर और भारतीय संत साहित्य
डॉ० रामचन्द्र तिवारी
विनय पत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन
डॉ० रामअवतार पाण्डेय
मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सराफ*
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना और
उनका काव्य संसार *डॉ० श्रीमती मञ्जु त्रिपाठी*
ननकी (उपन्यास) *बच्चन सिंह (पत्रकार)*
तरुण संन्यासी विवेकानन्द *राजेन्द्रमोहन भटनागर*
(नाटक)
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम *डॉ० सरला पाण्डेय*
वेद की कविता *प्रभुदयाल मिश्र*
भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र
तथा हिन्दी आलोचना *डॉ० रामचन्द्र तिवारी*
सृष्टि : एक दैवी स्वप्न
मेहेर बाबा *प्रस्तुतकर्ता : शिवेन्द्र सहाय*
व्यंग्यकार की दृष्टि में काशी *डॉ० धीरेन्द्रनाथ सिंह*
The Rise and growth of Hindi Journalism
Dr. R.R. Bhatnagar, Ed. by Dr. D.N. Singh
व्यावहारिक पत्रकारिता *डॉ० बच्चन सिंह* (पत्रकार)
पूर्वाञ्चल के संत-महात्मा *सं० पुरुषोत्तमदास मोदी*
Indian Aesthetics and Musicology
Dr. Premlata Sharma
जयशंकरप्रसाद : अंतरंग संस्मरण
सं० डॉ० राजेन्द्रनारायण शर्मा

पत्र, पत्रकार सरकार

काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर

एक सौ बीस रुपये

इस पुस्तक का पूर्णतया संशोधित तथा परिवर्धित संस्करण। पत्र तथा पत्रकारों से सम्बन्धित नये शासन देशों के सन्दर्भ यह संस्करण पत्रकारों के लिए अत्यन्त उपयोगी है।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

प्रमुख पुस्तकें

साहित्य शास्त्र

आधुनिक हिन्दी आलोचना : संदर्भ एवं दृष्टि (पारिभाषिक शब्दावली का साक्ष्य) *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 150
काव्यरस : चिन्तन और आस्वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 50
नया काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 80
काव्यशास्त्र *डॉ० भगीरथ मिश्र* 150
पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास सिद्धान्त और वाद *डॉ० भगीरथ मिश्र* 150

व्याकरण, भाषा और कोश

भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा की भूमिका *डॉ० त्रिलोचन पाण्डेय* 40
प्रयोजनमूलक हिन्दी : सिद्धान्त और व्यवहार (सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग) *रघुनन्दनप्रसाद शर्मा* 150
कार्यालयीय हिन्दी *डॉ० विजयपाल सिंह* सजिल्द 80, अजिल्द 50
प्रामाणिक व्याकरण एवं रचना *डॉ० विजयपाल सिंह* 65
मध्यकालीन अवधी का विकास (पदुमावती और रामचरितमानस के व्याकरणिक रूप) *डॉ० कन्हैया सिंह* 160
भाषाशास्त्र तथा हिन्दी भाषा की रूपरेखा *डॉ० देवेन्द्र शास्त्री* 50
भाषा-विज्ञान और भाषा-शास्त्र *डॉ० कपिलदेव द्विवेदी* सजिल्द 200, अजिल्द 100
हिन्दी का सांस्कृतिक परिवेश *डॉ० लालजी सिंह* 50
नूतन पर्यायवाची एवं विपर्याय कोश *डॉ० बदरीनाथ कपूर* 200

साहित्य समीक्षा

मध्ययुगीन काव्य प्रतिभाएँ *डॉ० रामकली सराफ* 180
वाग्द्वार *प्रो० कल्याणमल लोढ़ा* 250
(सात हिन्दी कवियों का मौलिक अध्ययन)
सृजन यज्ञ जारी है (विवेकी राय : साहित्य समीक्षा) *सं० डॉ० अनिलकुमार आंजनेय* 100
वाग्धारा *सं० डॉ० अवधेशप्रसाद सिंह* 150
समकालीन कविता की प्रवृत्तियाँ *डॉ० रामकली सराफ* 200
चेतना, शिक्षा एवं संस्कृति *डॉ० अजब सिंह* 80
यथार्थवाद : पुनर्मूल्यांकन *डॉ० अजब सिंह* 100
राष्ट्रीयता का तुलनात्मक्र परिप्रेक्ष्य *डॉ० सुदर्शन पण्डा* 120
साहित्य, सौन्दर्य और संस्कृति *सं० डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 150
साहित्य और संस्कृति *डॉ० कन्हैया सिंह व डॉ० राजेश सिंह* 140
हिन्दी का गद्य साहित्य *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* सजिल्द 400, अजिल्द 250
रघुवीर सहाय की काव्यानुभूति और काव्यभाषा *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 80
समकालीन कवि-एक अन्तःसूत्र *डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 100

तुलसी साहित्य समीक्षा

कथा राम कै गूढ़ *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 125
मानस विमर्श (दो भाग) *डॉ० भगीरथ दीक्षित* 300
मानस-मीमांसा *डॉ० युगेश्वर मिश्र* सजिल्द 250, अजिल्द 150
मानस सूक्ति सुधा *डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 80

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल साहित्य-समीक्षा

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* सजिल्द 70, अजिल्द 40
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल आलोचना कोश *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 50

अज्ञेय साहित्य-समीक्षा

अज्ञेय : चेतना के सीमान्त *डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान* 80
अज्ञेय : एक मनोवैज्ञानिक अध्ययन ,, 40
अज्ञेय : शिखर अनुभूतियाँ *डॉ० ज्वालाप्रसाद खेतान* 80
अज्ञेय की गद्य-शैली *डॉ० सावित्री मिश्र* 50
अज्ञेय और 'शेखर : एक जीवनी' *डॉ० अनन्तकीर्ति तिवारी* 40

कबीर-साहित्य

कबीर-वाङ्मय (पाठभेद, टीका तथा समीक्षा सहित) *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह*
प्रथम खंड : रमैनी सजिल्द 80, अजिल्द 50
द्वितीय खंड : सबद सजिल्द 250, अजिल्द 150
तृतीय खंड : साखी सजिल्द 250, अजिल्द 140
कबीर काव्य कोश *डॉ० वासुदेव सिंह* 150
कबीर वाणी पीयूष *डॉ० जयदेव सिंह तथा डॉ० वासुदेव सिंह* 45
कबीर बीजक का भाषाशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० शुकदेव सिंह* 40
कबीर की भाषा *डॉ० माताबदल जायसवाल* 50
संत कबीर और भगताही पंथ *डॉ० शुकदेव सिंह* सजिल्द 130, अजिल्द 100
संतो राह दुओ हम दीठा (कबीर) *सं० डॉ० भगवानदेव पाण्डेय* 150
कबीर और अखा : तुलनात्मक अध्ययन *डॉ० रामनाथ घूरेलाल शर्मा* 80

शोध-ग्रन्थ

प्रगतिशील काव्यधारा और त्रिलोचन *डॉ० हरिनिवास पाण्डेय* 150
प्रगतिशील आलोचना की परम्परा और डॉ० रामविलास शर्मा *डॉ० राजीव सिंह* 150
आधुनिक हिन्दी कविता का वैचारिक पक्ष *डॉ० रतनकुमार पाण्डेय* 400
हिन्दी व्यंग्य साहित्य और हरिशंकर परसाई *डॉ० मदालसा व्यास* 200
विनय पत्रिका का काव्यशास्त्रीय अध्ययन *डॉ० रामअवतार पाण्डेय* 350
मध्ययुगीन हिन्दी संत साहित्य और रवीन्द्रनाथ *डॉ० रामेश्वर मिश्र* 80
हिन्दी में अनेकार्थता का अनुशीलन *डॉ० त्रिभुवन ओझा* 100
रीतिकालीन वीर-काव्यों का सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० शिवनारायण सिंह* 90
निराला की काव्यभाषा *डॉ० शकुन्तला शुक्ल* 80
आधुनिकता और मोहन राकेश *डॉ० उर्मिला मिश्र* 80

लोक साहित्य

गंगाघाटी के गीत *डॉ० हीरालाल तिवारी* 100
लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम *डॉ० शान्ति जैन* 700

काव्य-ग्रन्थ

जौहर *श्यामनारायण पाण्डेय* सजिल्द 100, अजिल्द 50
परशुराम (खण्ड-काव्य) *श्यामनारायण पाण्डेय* सजिल्द 60, अजिल्द 30
वेलि क्रिसन रुकमणी री *सं० डॉ० आनन्दप्रकाश दीक्षित* 80
कीर्तिलता और विद्यापति का युग *डॉ० अवधेश प्रधान* 40

कहानी (मौलिक कृति)

अन्नपूर्णानन्द रचनावली (हास्य व्यंग्य) *अन्नपूर्णानन्द* 150
समकालीन हिन्दी कथा-लेखिकाएँ *सं० डॉ० रामकली सराफ* 75
लाल हवेली *शिवानी* 60
दिल का पौधा *अलीम मसरूर* 35
मुद्रिका रहस्य *शरद जोशी* 60
तीसरा यात्री *कुसुम चतुर्वेदी* 80
आँगन में उगी पौध *कुसुम चतुर्वेदी* 140
अभी ठहरो अन्धी सदी *नीरजा माधव* 125
मुट्ठी में बन्द तूफान *अनिन्दिता* 95
और आसमान झुक गया *साधना राकेश* 120

उपन्यास

सागरी पताका *राधामोहन उपाध्याय* 250
मैत्रेयी (औपनिषदिक उपन्यास) *प्रभुदयाल मिश्र* 120
कर्मभूमि *प्रेमचंद* 40
निर्मला *प्रेमचंद* 25
संक्षिप्त गबन *प्रेमचंद* 30
गबन (सम्पूर्ण) *प्रेमचंद* 125
गोदान *प्रेमचंद* 75
मुझे विश्वास है *विमल मित्र* 60
गाँधी की काँवर *हरीन्द्र दवे* 40
बहुत देर कर दी *अलीम मसरूर* 60
मंगला *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30
चौदह फेरे *शिवानी* 100
ललिता (तमिल उपन्यास का अनुवाद) *अखिलन* 25
बज उठी पायलिया (इळंगोवडिहळ् रचित शिलप्पदिकारम्) *रा० वीलिक्काथन्* 50
नया जीवन *अखिलन* 60
इन्द्रधनुष *अनन्तगोपाल शेवड़े* 30
आओ लौट चलें *न्यायमूर्ति गणेशदत्त दूबे* 40

नाटक एकांकी (मौलिक तथा सम्पादित)

शताब्दी पुरुष *राजेन्द्रमोहन भटनागर* 100

कैकेयी विजय *रामजी उपाध्याय* 25
सीताभ्युदय *रामजी उपाध्याय* 25
अशोक विजय *रामजी उपाध्याय* 25
लीलाशुक *डॉ० सूर्यनारायण द्विवेदी* 50
ध्रुवस्वामिनी (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 9
चन्द्रगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 25
स्कन्दगुप्त (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 20
अजातशत्रु (नाटक) *जयशंकरप्रसाद* 16
भारत-दुर्दशा *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 8
श्रीचन्द्रावली नाटिका *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 16
अँधेर नगरी *भारतेन्दु हरिश्चन्द्र* 12
महाकवि कालिदास *शिवप्रसाद मिश्र 'रुद्र काशिकेय'* 25
गंगाद्वार *पं० लक्ष्मीनारायण मिश्र* 25

ललित निबन्ध

वाणी का क्षीर सागर *कुबेरनाथ राय* 120
जगत तपोवन सो किया *डॉ० विवेकी राय* 100
किरात नदी में चन्द्र-मधु *कुबेरनाथ राय* 60
कहीं दूर जब दिन ढले *डॉ० गुणवन्त शाह* 40
भोर का आवाहन *डॉ० विद्यानिवास मिश्र* 20

योग, स्वास्थ्य एवं व्यक्तित्व

योग साधना (80 चित्रों सहित) *दुर्गाशंकर अवस्थी* 120
योग के विविध आयाम *डॉ० रामचन्द्र तिवारी* 40
दीर्घायु के रहस्य *डॉ० विनयमोहन शर्मा* 50
मधुमेह और आहार *सं० डॉ० भानुशंकर मेहता*
सजिल्द 100, अजिल्द 60
अपने व्यक्तित्व को पहचानिए *डॉ० सत्येन्द्रनाथ राय* 50

इतिहास, संस्कृति और कला

कला *हंसकुमार तिवारी* 150
प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारधारा
डॉ० लल्लनजी गोपाल 150
विश्व की प्राचीन सभ्यताएँ *डॉ० श्रीराम गोयल* 200
प्रागैतिहासिक मानव और संस्कृतियाँ ,, 50
वाल्मीकियुगीन भारत *डॉ० मंजुला श्रीवास्तव* 200
प्राचीन भारतीय समाज और चिन्तन
डॉ० चन्द्रदेव सिंह 150
ग्रीक-भारतीय (अथवा यवन) *प्रो० ए०के० नारायण* 300
प्राचीन भारत *डॉ० राजबली पाण्डेय* 300
गुप्त साम्राज्य *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 350
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख (खण्ड-1 :
मौर्य-काल से कुषाण (गुप्त-पूर्व)
काल तक) *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 150
प्राचीन भारत के प्रमुख अभिलेख
(खण्ड-2 : गुप्तकाल 319-543 ई०) ,, 150
भारतीय वास्तुकला *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 150
भारत के पूर्व-कालिक सिक्के ,, 275
प्राचीन भारतीय मुद्राएँ *डॉ० परमेश्वरीलाल गुप्त* 60
गुप्तोत्तरकालीन उत्तर भारतीय मुद्राएँ
(600 से 1200 ई०) *डॉ० ओंकारनाथ सिंह*
सजिल्द 100, अजिल्द 70
गुप्तकालीन कला एवं वास्तु
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 200
प्राचीन भारतीय प्रतिमा-विज्ञान
एवं मूर्ति-कला *डॉ० ब्रजभूषण श्रीवास्तव* 200
शुंगकालीन भारत *सच्चिदानन्द त्रिपाठी* 50
चालुक्य और उनकी शासन-व्यवस्था
डॉ० रेणुका कुमारी 60
बुद्ध और बोधिवृक्ष *डॉ० शीला सिंह* 150
कम्बुज देश का राजनैतिक और
सांस्कृतिक इतिहास *डॉ० महेशकुमार शरण* 175
मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी एवं डॉ० कमल गिरि 150
मध्यकालीन भारतीय प्रतिमालक्षण
(7वीं शती से 13वीं शती)
डॉ० मारुतिनन्दन तिवारी एवं डॉ० कमल गिरि 325
इतिह ास दर्शन *डॉ० झारखण्ड चौबे* सजिल्द 120
अजिल्द 70
मध्यकालीन भारतीय इतिहास-लेखन
डॉ० हरिशंकर श्रीवास्तव 80
भारतीय संस्कृति की रूपरेखा
डॉ० पृथ्वीकुमार अग्रवाल 250
दिल्ली के सुलतानों की धार्मिक नीति
(1206-1526 ई०) *डॉ० निर्मला गुप्ता* 80
काशी की पाण्डित्य परम्परा
पं० बलदेव उपाध्याय 600
काशी के घाट : कलात्मक एवं
सांस्कृतिक अध्ययन *डॉ० हरिशंकर* 300
वाराणसी के स्थाननामों का सांस्कृतिक
अध्ययन *डॉ० सरितकिशोरी श्रीवास्तव* 250
एक संस्कृति : एक इतिहास *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 395
(250 वर्ष के सांस्कृतिक संक्रमण की महागाथा)
उदारवाद और गोपालकृष्ण गोखले *सतीशकुमार* 50

चित्रकला

भारतीय चित्रकला के मूल स्रोत
(संस्कृत साहित्य के उल्लेखों पर आधारित)
डॉ० भानु अग्रवाल 400
कला *हंसकुमार तिवारी* 150

समाजशास्त्र, दर्शन तथा मनोविज्ञान

एक संस्कृति : एक इतिहास *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 395
ब्राह्मण-समाज का ऐतिहासिक अनुशीलन ,, 200
भारद्वाज : पूर्वज और वंशज *विश्वनाथ भारद्वाज* 560
राष्ट्रीयता का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य *सुदर्शन पण्डा* 120
क्षत्रियों की उत्पत्ति एवं विकास *डॉ० सरोज रानी* 200
हिन्दू समाज : संघटन और विघटन
डॉ० पुरुषोत्तम गणेश सहस्रबुद्धे 50
अपराध के नये आयाम तथा
पुलिस की समस्याएँ *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 50
भारतीय पुलिस *परिपूर्णानन्द वर्म्मा* 80
पुलिसकर्मियों की समस्याएँ :
समाजवैज्ञानिक अध्ययन *डॉ० विजयप्रताप राय* 300
सामाजिक व्यवस्था में पुलिस
की भूमिका *चमनलाल प्रद्योत* 40
Modern Indian Mysticism (3 Vols.)
Sobharani Basu 150

शिक्षा

Educational and Vocational Guidance
in India *Dr. K.P. Pandey* 300
Teaching of English in India
Dr. K.P. Pandey, Dr. Amita 300
शैक्षिक अनुसन्धान *डॉ० के०पी० पाण्डेय* 100
शैक्षिक तकनालॉजी के आयाम
डॉ० राजेश्वर उपाध्याय व डॉ० सरला पाण्डेय 100
शिक्षा मनोविज्ञान के मूल आधार *सत्यव्रत तिवारी* 50

पत्रकारिता, जनसंचार, सिनेमा

संसद और संवाददाता (संसदीय रिपोर्टिंग)
ललितेश्वरप्रसाद सिंह श्रीवास्तव 120
इतिहास निर्माता पत्रकार *डॉ० अर्जुन तिवारी* 60
पत्र, पत्रकार और सरकार (परिवर्धित संस्करण)
काशीनाथ गोविन्द जोगलेकर 120
समाचार और संवाददाता ,, 80
प्रेस विधि *डॉ० नन्दकिशोर त्रिखा* 150
संचार क्रान्ति और हिन्दी पत्रकारिता
डॉ० अशोककुमार शर्मा 200
संवाद संकलन विज्ञान *नारायण व्यंकटेश दामले* 50
स्वतंत्रता संग्राम की पत्रकारिता और
पं० दशरथप्रसाद द्विवेदी *डॉ० अर्जुन तिवारी* 120
हिन्दी पत्रकारिता के नये प्रतिमान *बच्चन सिंह* 40
आधुनिक पत्रकारिता *डॉ० अर्जुन तिवारी* 80
पत्र प्रकाशन और प्रक्रिया *शिवप्रसाद भारती* 200
पराड़करजी और पत्रकारिता *डॉ० लक्ष्मीशंकर व्यास* 30
आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और
साहित्यिक पत्रकारिता *इन्द्रसेन सिंह* 120
महामना मालवीय और हिन्दी
पत्रकारिता *लक्ष्मीशंकर व्यास* 50
Mass Communication & Development
(Ed.) Dr. Baldev Raj Gupta 250
Journalism by Old and New Masers ,, 250
Modern Journalism & Mass Communication ,, 250

संगीत

राग जिज्ञासा *देवेन्द्रनाथ शुक्ल* 150
भारतीय सङ्गीत का इतिहास
डॉ० ठाकुर जयदेव सिंह 300
प्रणव-भारती *पं० ओङ्कारनाथ ठाकुर* 300
संगीतराज : नृपतिकुम्भ कर्ण प्रणीत :
प्रथम खण्ड 150
भारतीय सङ्गीतशास्त्र का दर्शनपरक अनुशीलन
डॉ० विमला मुसलगाँवकर 400
Indian Music *Dr. Thakur Jaideva Singh* 450
Indian Aesthetics and Musicology
Dr. Premlata Sharma 400

विज्ञान

विज्ञान-कथा *डॉ० एस०एन० घोष* सजिल्द 80
अजिल्द 50
प्राचीन भारतीय अणु एवं किरण विज्ञान
(4 भागों में) *डॉ० अष्टभुजाप्रसाद पाण्डेय* 200

कम्प्यूटर

बेसिक प्रोग्रामिंग *ओमप्रकाश मौर्य* 160

भूगोल

Electoral Geography of India *Dr. S.K. Dikshit* 250
भौगोलिक चिन्तन : उद्भव एवं विकास
डॉ० श्रीकांत दीक्षित सजिल्द 150, अजिल्द 90

Zoology

Fishes of U.P. & Bihar *Dr. Gopalji Srivastava*
(*H.B*) 150, (*P.B*) 80

Physics

Practical Physics I *Dr. C.K. Bhattacharya* 60
Matrices & Its Applications ,, 15
Waves and Oscillations (Fourth Revised
Edition) *Dongre & Bhattacharya* 120

राजीव सक्सेना नहीं रहे

हिन्दी के वयोवृद्ध कवि एवं पत्रकार **राजीव सक्सेना** का 15 दिसम्बर की रात अपने आवास पर निधन हो गया। वह 77 वर्ष के थे। उत्तर प्रदेश के झाँसी में 30 नवम्बर 1923 को जन्मे राजीव सक्सेना को 1980 में सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार मिल चुका था। दिल्ली हिन्दी अकादमी ने भी उन्हें दो बार पुरस्कृत किया था। वह अकविता दौर के प्रमुख कवियों में थे।

वह 1942-43 में जागरण के सहायक संपादक भी थे। 1945 से 1960 तक वह 'जनयुग' और 'लोकयुद्ध' से भी जुड़े रहे। 'आत्मनिर्वासन तथा अन्य कविताएँ' उनकी बहुचर्चित काव्य पुस्तक है।

साहित्यिक पत्रिकाओं के प्रकाशकों से अनुरोध है कि अपनी पत्रिका के नवीनतम अथवा विशेष अंक की एक प्रति 'भारतीय वाङ्मय' में समीक्षार्थ भेजें। प्रत्येक अंक के प्रमुख लेखों का उल्लेख पत्रिकाओं के संदर्भ किया जायगा। 'भारतीय वाङ्मय' का प्रयास है कि हिन्दी ही नहीं अहिन्दी भाषी क्षेत्र भी हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं से अद्यतन परिचित होते रहें।

सम्पादक

कथाकार गिरिराज किशोर को व्यास सम्मान

मोहनदास करमचंद गाँधी के महात्मा बनने से पूर्व के जीवन गाथा को आधार बनाकर लिखे गये 'पहला गिरमिटिया' उपन्यास के लिये विख्यात कथाकार **गिरिराज किशोर** को वर्ष 2000 का व्यास सम्मान प्रदान किया जाएगा। इस सम्मान में ढाई लाख रुपये नकद प्रदान किये जाते हैं। डॉ० किशोर से पहले यह सम्मान डॉ० रामविलास शर्मा (1991), डॉ० शिवप्रसाद सिंह (1992), श्री गिरिजाकुमार माथुर (1993), डॉ० धर्मवीर भारती (1994), श्रीकुँवरनारायण (1995), डॉ० रामस्वरूप चतुर्वेदी (1996), डॉ० केदारनाथ सिंह (1997), श्री गोविंद मिश्र (1998), श्री श्रीलाल शुक्ल (1999) को प्रदान किया जा चुका है।

डबराल को अकादमी पुरस्कार

उर्दू के साहित्यकार अम्बर बहरायची और हिन्दी लेखक **मंगलेश डबराल** को इस वर्ष का साहित्य अकादमी पुरस्कार के लिए चुना गया है। अकादमी की विज्ञप्ति के अनुसार विभिन्न भाषाओं के अकादमी पुरस्कारों के लिए 21 पुस्तकों को चुना गया है। ये पुरस्कार 1 जनवरी 1994 से 31 दिसम्बर 1998 के मध्य तक पहली बार प्रकाशित पुस्तकों के लिए दिये गये हैं।

पत्रकारवरेण्य केजरीवाल का लोकान्तरण

'हिन्दुस्तान टाइम्स' पत्रसमूह की प्रमुख साप्ताहिक पत्रिका 'हिन्दुस्तान' (अब अस्तंगत) के संयुक्त सम्पादक तथा सारस्वत साधक गोविन्दप्रसाद केजरीवाल का गत अक्तूबर में नई दिल्ली में देहान्त हो गया। उनकी आयु 77 वर्ष थी। प्रबुद्ध चिन्तक तथा दार्शनिक कहानियों के सर्जक के रूप में उनकी मान्यता थी। उनकी प्रेरणा और प्रयास से साप्ताहिक 'हिन्दुस्तान' के तंत्रविषयक कई विशेषांक संग्रहणीय रहे हैं। उनकी पत्रकारी जीवन-यात्रा का आरम्भ वाराणसी में हुआ था। उन्होंने 'करैला' नाम से हास्य-व्यंग्य मासिक पत्रिका प्रकाशित की थी जिसमें तत्कालीन प्रमुख हास्य-व्यंग्य-लेखक छपते थे। वे स्वयं पैरोडी लिखने में सिद्धहस्त थे। सेवानिवृत्ति के बाद वे नई दिल्ली में बस गए थे। दिल्ली हिन्दी साहित्य सम्मेलन के वे प्रमुख स्तम्भ और पं० गोपालप्रसाद व्यास के दक्षिणहस्त थे।

उनका जन्म बिहार के जसीडीह (वैद्यनाथ धाम) में हुआ था, किन्तु युवावस्था में वाराणसी उनकी कर्मभूमि बन गई। काशी नागरीप्रचारिणी सभा के वे वर्षों तक प्रचारमंत्री थे। हिन्दीहितैषी के रूप में वे स्व० चन्द्रबली पांडे के विश्वसनीय सहयोगी थे। उनके पिता मोतीलाल केजरीवाल आजादी के संग्राम में कांग्रेस के नेता और देशरत्न डॉक्टर राजेन्द्रप्रसाद के घनिष्ठ मित्रों में थे।

भारतीय वाङ्मय

मासिक

वर्ष : 2 **जनवरी 2001** **अंक : 1**

प्रधान सम्पादक

पुरुषोत्तमदास मोदी

सम्पादक

परागकुमार मोदी

वार्षिक शुल्क

रु० 30.00

विश्वविद्यालय प्रकाशन

वाराणसी

के लिए

अनुरागकुमार मोदी

द्वारा प्रकाशित

वाराणसी एलेक्ट्रॉनिक कलर प्रिण्टर्स प्रा० लि०

वाराणसी

द्वारा मुद्रित

प्रेस रजिस्ट्रेशन एक्ट 1807 ई० धारा 5 के अन्तर्गत

रजिस्टर्ड नं० ए डी-174/2000

सेवा में,

प्रेषक : (If undelivered please return to :)

विश्वविद्यालय प्रकाशन

प्रमुख प्रकाशक एवं पुस्तक विक्रेता

(विविध विषयों की हिन्दी, संस्कृत तथा अंग्रेजी पुस्तकों का विशाल संग्रह)

विशालाक्षी भवन, पो०बाक्स 1149

चौक, वाराणसी-221 001 (उ०प्र०) (भारत)

VISHWAVIDYALAYA PRAKASHAN

Premier Publisher & Bookseller

(BOOKS IN HINDI, SANSKRIT & ENGLISH FOR STUDENTS, SCHOLARS, ACADEMICIANS & LIBRARIAN)

Vishalakshi Building, P.O. Box : 1149

Chowk, VARANASI-221 001(U.P.) (INDIA)

: (0542) 353741, 353082 ● Fax : (0542) 353082 ● E-mail : vvp@vsnl.com ● vvp@ndb.vsnl.net.in